



सामान्य ज्ञान ग्रुप सामान्य ज्ञान ग्रुप



ओम प्रकाश पंवार
घड़साना, श्री गंगानगर



श्री दुर्गेश चौधरी
खाजूवाला, बीकानेर

मनोविज्ञान नोट्स

Daily Current Affairs PDF, Best Test Series, Best GK PDF के लिए हमें Follow करें



GK Trick By Nitin Gupta
The Ultimate Key to Success.

Welcome To

GK TRICK BY NITIN GUPTA APP

यहाँ पर आपको मिलेगा

- ✓ Best PDF Notes For All Exams
- ✓ Best Test Series For All Exams
- ✓ Daily Current Affairs PDF
- ✓ सभी Course बहुत ही कम Price पर
- ✓ सभी Test Detail Discription के साथ व Analysis करने को सुविधा



मनोविज्ञान

- ✍ मनोविज्ञान को शताब्दियों पूर्व दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में माना जाता था ।
- ✍ मनोविज्ञान को स्वतन्त्र विषय बनाने के लिए इसे परिभाषित करना शुरू किया गया ।
- ✍ Psychology शब्द की उत्पत्ति लेटिन व यूनानी के दो शब्दों Psychi + logos से मिलकर हुई है ।
- ✍ Psychi का अर्थ होता है – आत्मा तथा logos का अर्थ होता है – अध्ययन करना / विज्ञान ।
- ✍ इसी शाब्दिक अर्थ के आधार पर सर्वप्रथम प्लेटो, अरस्तु, डेकार्ट आदि के द्वारा मनोविज्ञान को “आत्मा का विज्ञान” माना गया ।
- ✍ आत्मा शब्द की स्पष्ट व्याख्या नही होने के कारण 16 वीं शताब्दी के अंत में यह परिभाषा अमान्य हो गई ।
- ✍ 17 वीं शताब्दी में इटली के मनोवैज्ञानिक पोम्पोनोजी के द्वारा मन या मस्तिष्क का विज्ञान माना गया , बाद में यह परिभाषा भी अमान्य हो गयी ।
- ✍ 19 वीं शताब्दी में विलियम वुंट, विलियम जेम्स वाइक्स, जेम्स सली आदि के द्वारा मनोविज्ञान को “चेतना का विज्ञान” माना गया ।
- ✍ अपूर्ण अर्थ होने के कारण यह परिभाषा भी अमान्य हो गयी ।
- ✍ विलियम वुंट ने जर्मनी के लिपजिग नामक स्थान पर 1879 में प्रथम मनोवैज्ञानिक शाखा स्थापना की ।
- ✍ इसलिए विलियम वुंट को प्रयोगशाला विज्ञान का जनक माना जाता है ।
- ✍ इसी समय से मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र की शाखा के रूप से अलग होकर एक स्वतन्त्र विषय के रूप में सामने आया ।
- ✍ लिपजिग विश्वविद्यालय को वर्तमान में कार्ल-मार्क्स विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है ।
- ✍ विलियम मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक Outline Psychology के पृष्ठ 16 पर चेतना शब्द की कड़ी निंदा की ।
- ✍ 20 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया और आज तक यही परिभाषा प्रचलित है ।
- ✍ व्यवहार का विज्ञान मानने वाले प्रमुख मनोवैज्ञानिक है :- वाटसन
- ✍ इसके अलावा वुडवर्थ , स्किनर , थोर्नडाइक , मैक्डूगल आदि के द्वारा भी मनोविज्ञान को व्यवहार विज्ञान माना गया है

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ

- ✍ वाटसन के अनुसार : - मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है ।
- ✍ **NOTE :-** जेम्स ड्रेवर के द्वारा भी मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया है ।

- ✍ वाटसन के अनुसार : - तुम मुझे कोई भी बालक दे दो , मै उसे वैसा बना सकता हूँ जैसे मै बनाना चाहता हूँ।
- ✍ वुडवर्थ के अनुसार : - मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया , फिर मन का त्याग किया फिर चेतना का त्याग किया और आज मनोविज्ञान व्यवहार की विधि के स्वरूप को स्वीकार करता है।
- ✍ क्रो एव क्रो के अनुसार : - 20वीं शताब्दी बच्चो की शताब्दी है।

मनोविज्ञान के जनक : -	अरस्तु
शिक्षा मनोविज्ञान के जनक : -	थार्नडाइक
प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक : -	विलियम वुंट
आधुनिक मनोविज्ञान के जनक : -	विलियम वुंट
अमेरिकन मनोविज्ञान के जनक : -	विलियम जेम्स
किशोर मनोविज्ञान के जनक : -	स्टेनली होल
व्यक्तित्व मनोविज्ञान के जनक : -	जीन पियाजे
व्यवहारवाद के जनक : -	वाटसन
मूल प्रवृत्ति के जनक : -	मैक्डूगल
मौलिक व्यवहारवादी के जनक : -	स्किनर

मनोविज्ञान की मुख्य शाखाएँ

1. सामान्य मनोविज्ञान
2. असामान्य मनोविज्ञान
3. तुलनात्मक मनोविज्ञान
4. समाज मनोविज्ञान
5. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
6. ओद्योगिक मनोविज्ञान
7. बाल मनोविज्ञान
8. किशोर मनोविज्ञान
9. प्रौढ़ मनोविज्ञान
10. विकासात्मक मनोविज्ञान
11. शिक्षा मनोविज्ञान
12. पशु मनोविज्ञान
13. निदानात्मक मनोविज्ञान
14. परा मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान

- ✎ मनोविज्ञान की शाखा में शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति 1900 में मानी जाती है | बाद में थार्नडाइक , जड़ , टश्मन आदि के प्रयासों से 1920 में शिक्षा मनोविज्ञान को स्पष्ट स्वरूप प्राप्त हुआ |
- ✎ थार्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक माना जाता है |
- ✎ शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्रपात रूसो ने किया |
- ✎ **रूसो के अनुसार** : - बालक एक पुस्तक के समान है जिसका अध्ययन प्रत्येक अध्यापक को करना चाहिए |
- ✎ शिक्षा के अंग्रेजी शब्द Education की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Education से हुई |
- ✎
E + Duco
(अन्दर से) (बाहर निकलना)
अर्थात शिक्षा बालक की अन्दर निहित योग्यताओं को बाहर निकालकर उसके व्यवहार में परिवर्तन या परिमार्जन करती है |
- ✎ Education शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के दो शब्दों Educare व Educere से भा मानी जाती है | जिसका अर्थ होता है – आगे बढ़ाना / बाहर निकालना / विकास करना |
- ✎ मानव व्यवहार का अध्ययन कर उसमें परिवर्तन या परिमार्जन करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएं

- ✎ **क्रो एव क्रो के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था सीखने के अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करता है |
- ✎ **स्कinner के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है |
- ✎ **स्कinner के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान वह शाखा है जो सीखने व सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन करती है |
- ✎ **स्कinner के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों की तैयारी की आधारशिला है |
- ✎ **पिल के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है |
- ✎ **जेम्स ड्रेवर के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान वह शाखा है जो मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों एवं खोजों के प्रयोग के साथ ही शिक्षा की समस्याओं के वैज्ञानिक अध्ययन से सम्बन्धित है |

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति

- ✎ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है , किसी भी वैज्ञानिक पद्धति में हम उसका अध्ययन करते हैं जिसका निरीक्षण किया जा सके अतः शिक्षा मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन करता है जिसका निरीक्षण किया जा सकता है ।
- ✎ शिक्षा मनोविज्ञान एक अनुप्रयुक्त व्यावहारिक विज्ञान है जो कि मानव के व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में वैज्ञानिक अध्ययन करता है ।
- ✎ शिक्षा मनोविज्ञान एक विधायक (सकारात्मक) विज्ञान है जो शिक्षा के कब , कैसे और कहाँ आदि प्रश्नों के उत्तर पर ध्यान केन्द्रित करता है ।
- ✎ शिक्षा मनोविज्ञान अतीत की अपेक्षा वर्तमान की घटनाओं के क्या और क्यों से सम्बन्धित है ।
- ✎ इसमें नियमों व सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है ।
- ✎ इसके सिद्धांत सार्वभौमिक होते हैं ।
- ✎ इसके द्वारा भविष्यवाणी की जा सकती है ।

शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र

- ✎ लिंडग्रेन के अनुसार : -
- ✎ 1. शिक्षार्थी (शिक्षा प्रक्रिया का केंद्र बिंदु)
- ✎ 2. सीखने की प्रक्रिया
- ✎ 3. सीखने की परिस्थिति
- ✎ 4. मापन एवं मूल्यांकन
- ✎ 5. निर्देशन एवं मानसिक स्वास्थ्य

शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता

- ✎ शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के द्वारा शिक्षक का दृष्टिकोण उन्नत व व्यापक हो जाता है ।
- ✎ ऐसा शिक्षक किसी भी प्रकार की कक्षा में शैक्षिक परिस्थितियाँ जागृत कर सकता है ।
- ✎ ऐसा शिक्षक स्वयं को जान सकता है तथा बालक को पहचान सकता है ।
- ✎ ऐसा शिक्षक बालकों के प्रति प्रेम , सहानुभूति व समदर्शी भाव को अपनाता है ।
- ✎ कक्षा में अनुशासन स्थापित कर सकता है ।
- ✎ व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार शिक्षण प्रदान किया जा सकता है ।

- ✍ बालको के बहुमुखी विकास के लिए उचित शिक्षण विधियों को अपनाया जा सकता है।
- ✍ बालको को शैक्षिक व व्यवहारिक निर्देशन दिया जा सकता है।
- ✍ बालको को विभिन्न प्रकार से अभिप्रेरित करते हुए उनमें रुचि जागृत की जा सकती है।
- ✍ बालको के व्यवहार का अध्ययन कर उनमें परिवर्तन या परिमार्जन किया जा सकता है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व = Persona (मुखौटा) – लेटिन भाषा का शब्द

- ✍ प्राचीन समय में बाह्य रूप – रेखा के आधार पर व्यक्तित्व को परिभाषित किया जाता था , लेकिन आज परिभाषा बदल चुकी है।
- ✍ वर्तमान समय में बाह्य व आंतरिक गुणों के समावेश को व्यक्तित्व कहा जाता है।
- ✍ ऑलपोर्ट के अनुसार :- व्यक्तित्व उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गव्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है।
- ✍ वेलेन्टाईन के अनुसार :- व्यक्तित्व जन्मजात व अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।
- ✍ वुडवर्थ के अनुसार :- व्यक्तित्व व्यक्ति की सम्पूर्ण गुणात्मकता है।

व्यक्तित्व का वर्गीकरण

पाश्चात्य दृष्टिकोण में

क्रेचमर के अनुसार :- क्रेचमर ने शारीरिक संरचना के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है।

प्रकार	अंग्रेजी नाम
1. स्थूलकाय – नाटे व्यक्ति	- पिकनिक
2. सुडोलकाय – खिलाड़ी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति	- एथलेटिक
3. क्षीणकाय – दुर्बल शरीर वाले	- एस्थेनिक
4. मिश्रित – मिले जुले	- डिसप्लास्टिक

शैल्डन के अनुसार :- शैल्डन ने भी शारीरिक संरचना के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है।

प्रकार	अंग्रेजी नाम
1. गोलाकार	एंडोमोर्फिक
2. आयताकार	मेसोमोर्फिक
3. लम्बाकार	एंटीमोर्फिक

स्प्रेंगर के अनुसार :- स्प्रेंगर ने समाज शास्त्रीय आधार पर व्यक्तित्व को छः भागों में वर्गीकृत किया है।

1. सेद्धान्तिक प्रवृत्ति वाले
2. सामाजिक प्रवृत्ति वाले
3. राजनैतिक प्रवृत्ति वाले
4. सोन्दर्यात्मक प्रवृत्ति वाले
5. आर्थिक प्रवृत्ति वाले
6. धार्मिक प्रवृत्ति वाले

जुंग / युंग के अनुसार – जुंग के द्वारा किया गया वर्गीकरण वर्तमान समय में सबसे अधिक प्रसिद्ध माना जाता है। इन्होंने मनोवैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है।

वर्गीकरण	विशेषता
1. अन्तर्मुखी	एकांत प्रिय, कम बोलने वाला
2. बहिर्मुखी	सामाजिक, बोलने वाला
3. उभयमुखी	उपरोक्त दोनों का मिश्रण

भारतीय दृष्टिकोण से व्यक्तित्व का वर्गीकरण -

1. सतोगुण :- सर्वगुण संपन्न ईश्वर व धर्म में
2. रजोगुण :- कुछ गुण व कुछ अवगुण कर्म में
3. तमोगुण :- दुष्ट प्रवृत्ति, राक्षस प्रवृत्ति, अवगुण ही अवगुण, सुख प्राप्ति वाली

आधुनिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व का वर्गीकरण

1. भावुक

2. कर्मशील
3. विचारशील

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

प्रवर्तक – सिग्मण्ड फ्रायड

❖ सिग्मण्ड फ्रायड ने मन की तीन दशाएं बताई है –

1. चेतन मन – 1/10 भाग - मस्तिष्क से जागृत अवस्था
2. अचेतन मन – 9/10 भाग - कटु अनुभूतियों, दुखद बातों व अतृप्त इच्छाओं का भंडार
3. अर्धचेतन मन – चेतन व अचेतन के बीच की अवस्था

❖ सिग्मण्ड फ्रायड ने व्यक्तित्व संरचना की दृष्टि से तीन अवस्थाएं बताई है –

1. इड (इदम) – सुखवादी सिद्धांत, अनैतिक व अपराधकारी इच्छाओं का भंडार | इड का सम्बन्ध अचेतन मन से है, यह अवस्था व्यक्ति को कुसमायोजित कर सकती है |
2. इगो (अहम) – वास्तविक सिद्धांत व्यक्तित्व का कार्यपालक, इड व सुपर इगो के बीच संतुलन का कार्य, समायोजन की अवस्था, इसका सम्बन्ध चेतन मन से है |
3. सुपर (इगो परम अहम) – आदर्शवादी सिद्धांत, आध्यात्मिकता की ओर रुझान, नैतिक व आदर्शवादी बातें, आदर्शों की अधिकता व्यक्ति को कुसमायोजित कर सकती है |

❖ ओडिपस व एलेक्ट्रा ग्रंथि - सिग्मण्ड फ्रायड के अनुसार लड़कों में ओडिपस ग्रंथि होने के कारण वे अपनी माता से अधिक प्यार करते हैं तथा लड़कियों में एलेक्ट्रा ग्रंथि होने के कारण वे अपने पिता से अधिक प्यार करती हैं |

❖ सिग्मण्ड फ्रायड ने दो मूल प्रवृत्ति बताई है –

1. जीवन मूल प्रवृत्ति
2. मृत्यु मूल प्रवृत्ति

❖ स्वमोह (निर्सिजिज्म) – अपने आप में मस्त रहने व अपने आप से प्यार करने की क्रिया को निर्सिजिज्म कहते हैं |

❖ लिबोडो - सिग्मण्ड फ्रायड ने कम प्रवृत्ति को लिबोडो कहा है | यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है और यदि इस प्रवृत्ति का दमन करने की कोशिश की जाती है तो व्यक्ति कुसमायोजित हो जाता है |

- ❖ शैशव कामुकता – शैशव कामुकता की बात से सिग्मण्ड फ्रायड व उनके शिष्य जुंग के बीच मतभेद हो जाता है तथा मतभेद के उपरांत जुंग एक अलग सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं, जिसका नाम है – विश्लेषणात्मक सिद्धांत

व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

I. प्रक्षेपण विधियाँ

- प्रक्षेपण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सिग्मण्ड फ्रायड के द्वारा किया गया | प्रक्षेपण का अर्थ होता है – अपनी बातों, विचारों व भावनाओं आदि को स्वयं न बताकर किसी अन्य उद्दीपक या पदार्थ के माध्यम से अभिव्यक्त करना |
- प्रक्षेपण विधियों के माध्यम से अचेतन मन की बातों को ज्ञात किया जाता है |

1. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण / कथा प्रसंग परीक्षण (TAT –Thematic Apperception Test)

✍ निर्माण – मॉर्गन एवं मुर्रे ने 1935 में

✍ कुल कार्ड – $30+1=31$

✍ चित्रों से संबंधित कुल कार्ड = 30

✍ खाली कार्ड = 1

- ❖ इस परीक्षण में 10 कार्ड पर पुरुषों से सम्बंधित, 10 कार्ड पर महिलाओं से सम्बंधित तथा बाकि 10 कार्ड पर दोनों से सम्बंधित चित्र बने होते हैं |
- ❖ व्यक्ति को चित्र दिखाकर कहानी लिखने को कहा जाता है | प्रत्येक चित्र अलग – अलग परिस्थिति को प्रदर्शित करता है | कम से कम 20 चित्रों पर कहानी लिखवाई जाती है |
- ❖ यह परीक्षण व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है तथा 14 वर्ष से अधिक आयु वालों के लिए विशेष उपयोगी है |

2. बाल – सम्प्रत्यक्ष परीक्षण (CAT – Children Apperception Test)

✍ निर्माण – ल्योपोल्ड बैलोक 1948 में

✍ विकास – डॉ. अरनेस्ट क्रिस

- ❖ इस परीक्षण में 10 कार्ड पर जानवरों के चित्र बने होते हैं बालक को चित्र दिखाकर कहानी लिखने को कहा जाता है |
- ❖ यह परीक्षण भी व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में प्रयोग किया जा सकता है तथा 3 से 11 वर्ष के बालकों के लिए विशेष उपयोगी है |

3. रोशर्न स्याही धब्बा परीक्षण (IBT – Ink Blot Test)

✎ निर्माण – हरमन रोशर्न 1921 में

- ❖ इस परीक्षण में 10 कार्ड पर स्याही के धब्बे बने होते हैं | 5 कार्ड पर काले व सफेद तथा 5 पर विभिन्न रंगों के धब्बे बने होते हैं |
- ❖ बालक को धब्बा दिखाकर आकृति के बारे में पूछा जाता है | यह परीक्षण व्यक्तिगत रूप से किसी भी आयु वर्ग पर प्रयोग किया जा सकता है |

4. वाक्य पूर्ति परीक्षण (SCT – Sentence Completion Test)

✎ निर्माण – 1930 में पाइन एवं टेण्डलर ने

- ❖ इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कार्य रोटर्स ने किया |
- ❖ इस परीक्षण में अधूरे वाक्यों को पूरा करने के लिए कहा जाता है |
जैसे – मैं बहुत खुश होता जब?
मेरे मित्र अक्सर|

5. स्वतन्त्र शब्द साहचर्य परीक्षण (FWAT- Free Word Association Test)

✎ निर्माण – 1879 में गोल्डन ने

इस परीक्षण के द्वारा व्यक्तित्व मापन के अलावा कई मानसिक रोगों का इलाज भी किया जाता है |

II. अन्य विधियाँ / अप्रक्षेपी

आत्मनिष्ठ या व्यक्तिगत विधियाँ

1. आत्मकथा विधि / अंतर्दर्शन विधि

✎ प्रवर्तक – विलियम वुन्ट व उनके शिष्य टिचनर

- ❖ यह एक प्राचीनतम विधि है ,इसमे व्यक्ति स्वयं के बारे में लिखता है | वैज्ञानिक विधि न होने के कारण आक इसका प्रयोग बहुत कम किया जाता है |

2. व्यक्ति इतिहास विधि / जीवनवृत्त विधि / केस स्टडी

✎ प्रवर्तक – टाईडमैन

- ❖ यह निदानात्मक अध्ययनों की सर्वश्रेष्ठ विधि है |
- ❖ यह असामान्य बालकों के निदान की सर्वश्रेष्ठ विधि है |

- ❖ समस्या के कारण को जानना निदान कहा जाता है जो की मनोविज्ञान की सहायता से किया जाता है।
- ❖ समस्या के कारण को दूर करना उपचार कहलाता है जो की शिक्षा की सहायता से किया जाता है , बिना निदान के उपचार संभव नहीं है।

3. प्रश्नावली विधि / व्यक्तित्व अनुसूची

✎ सर्वप्रथम वुडवर्थ ने Personal Data इन्वेन्ट्री / शीट का निर्माण किया।

- ❖ प्रश्नावली में आने – सामने होना जरूरी नहीं होता है, इसमें उत्तर के रूप में दो या तीन विकल्प होते हैं।
जैसे – हाँ, नहीं या कभी नहीं

प्रश्नावली के प्रकार

- बंद या प्रतिबंधित प्रश्नावली** – इसमें प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं या दिए गए 4 विकल्पों में से किसी एक पर सही का निशान लगाकर देने होते हैं।
- खुली प्रश्नावली** – इसमें प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक व स्वतंत्रतापूर्वक देने होते हैं।
- चित्रित प्रश्नावली** – इसमें चित्रों के माध्यम से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं।
- मिश्रित प्रश्नावली** – उपरोक्त सभी का मिला - जुला रूप।

4. साक्षात्कार

- ❖ इसकी शुरुआत अमेरिका में हुई।
- ❖ साक्षात्कार में आने सामने होना जरूरी होता है, इसमें प्रश्नों का कोई बंधन नहीं होता है और न ही कोई समय सीमा निश्चित होती है।
- ❖ साक्षात्कार को वार्तालाप का एक रूप माना जाता है।

साक्षात्कार के प्रकार –

- निर्देशित साक्षात्कार** – इस प्रकार के साक्षात्कार में प्रश्नों की भाषा, समय, तरीका आदि पहले से ही निश्चित होते हैं। यह सुनिश्चित व सुनियोजित तरीके से लिया जाने वाला साक्षात्कार है।
- अनिर्देशित साक्षात्कार** – इसे गहन निदानात्मक व केन्द्रित साक्षात्कार भी कहते हैं। इसमें प्रश्नों की भाषा, समय, तरीका आदि पहले से निश्चित नहीं होते हैं। इसकी प्रवृत्ति लचीली होती है व इसमें सामने वाले को स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किये जाते हैं।
- समाहारक साक्षात्कार** – यह उपरोक्त दोनों का मिला जुला रूप तथा साक्षात्कार की सर्वश्रेष्ठ व वैध विधि है।

वस्तुनिष्ठ विधियाँ

1. निरीक्षण विधि / बहिर्दर्शन विधि / सर्वभौमिक विधि

✍ प्रवर्तक वाटसन

- ❖ इस विधि में सामने वाले व्यक्ति के व्यवहार का भिन्न भिन्न परिस्थितियों में अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला जाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है।

2. समाजमिति विधि

✍ प्रवर्तक जे.एल.मोरेनो

- ❖ इस विधि में व्यक्ति की सामाजिकता के बारे में समाज के व्यक्तियों से जानकारी लेकर निष्कर्ष निकाला जाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है।

3. क्रम निर्धारण विधि / रेटिंग स्केल

✍ प्रवर्तक थर्स्टन

- ❖ इस परीक्षण में कर्म निर्धारण मापनी के माध्यम से आकड़े एकत्रित करके निष्कर्ष निकाला जाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है।

4. शारीरिक परीक्षण –

- ❖ इस परीक्षण में व्यक्ति की शारीरिक जाँच करके निष्कर्ष निकाला जाता है कि निर्धारित नौकरी के लिए वह स्वस्थ है या नहीं।

समायोजन

❖ मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान

✍ सर्वप्रथम मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान शब्द का प्रयोग क्लिफोर्ड बियर्स ने 1908 में अपनी पुस्तक A Mind That Found Itself के अंतर्गत किया। इसी पुस्तक के परिणामस्वरूप अमेरिका की स्थापना की गई।

❖ इसके मुख्य रूप से तीन कार्य थे –

1. मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा
2. मानसिक रोगों की रोकथाम

3. मानसिक रोगों का उपचार

❖ मानसिक स्वास्थ्य

- ✎ मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य रोगों एवं दोषों के अभाव तथा मानसिक विकृतियों के बचाव से है।
- ✎ जो व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं, उनके व्यवहार में संयम, संतुलन व एकरूपता तथा निर्णय करने की क्षमता पाई जाती है।
- ✎ इसके विपरीत जो व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ होते हैं, वे हमेशा तनाव, चिंता, कुण्ठा आदि के शिकार होते हैं। उनमें आकांक्षा की कमी पाई जाती है तथा वे गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं।

❖ समायोजन

- ✎ समायोजन की प्रक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकताएं व उनको पूरी करने वाली परिस्थितियों के बीच तालमेल स्थापित करने से है।
- ✎ जो व्यक्ति इन दोनों के बीच तालमेल स्थापित नहीं कर पाता है ऐसा व्यक्ति तनाव, चिंता, कुण्ठा आदि का शिकार होकर असामान्य व्यवहार करने लगता है, इसी असामान्यता की स्थिति को कुसमायोजित अथवा मानसिक रोगग्रस्तता कहते हैं।

❖ मानसिक रोग

1. **तनाव** – जब व्यक्ति समय, परिस्थिति तथा आवश्यकता अनुसार कार्य नहीं कर पाता तथा असफल हो जाता है तो वह तनाव का शिकार हो जाता है।
2. **दुश्चिंता** – जब अचेतन मन में दमित इच्छा चेतन में आने का प्रयास करती है तो व्यक्ति दुश्चिंता का शिकार हो जाता है।
3. **दबाव** – सफलता व असफलता तथा आत्मसम्मान की रक्षा के समय दबाव उत्पन्न होता है।
4. **भगनाशा या कुण्ठा** – बार-बार प्रयत्न करने के बावजूद भी जब व्यक्ति असफल हो जाता है तो वह निराश हो जाता है, इसी निराशा को मनोवैज्ञानिक भाषा में भगनाशा या कुण्ठा कहते हैं।
5. **द्वंद्व या संघर्ष** – जब एक साथ दो अवसर उपस्थित हो जाते हैं और किसी एक का चयन करना होता है तो मस्तिष्क में द्वंद्व या संघर्ष उत्पन्न हो जाता है।

मानसिक मनोरचनाएँ / समायोजन तंत्र / आत्मसुरक्षा अभिक्रिया
रक्षात्मक युक्तियाँ / प्रतिरक्षण प्रणालियाँ / रक्षा कवच

मानसिक मनोरचनाएँ वे साधन हैं जिनको व्यक्ति तनाव, चिंता, कुण्ठा आदि से बचने या उनके साथ समायोजन करने के लिए उपाय के रूप में अपनाता है।

प्रत्यक्ष उपाय

1. बाधाओं को दूर करना।
2. अन्य मार्ग खोजना।
3. लक्ष्य का प्रतिस्थापन।
4. विश्लेषण एवं निर्णय।

अप्रत्यक्ष उपाय

- | | | |
|--------------|---------------------------------|-----------------------------------|
| 1. दमन | 6. आश्रित होना | 10. औचित्य स्थापन / युक्तिकरण / |
| 2. शमन | 7. विस्थापन | तर्क संगतिकरण |
| 3. प्रक्षेपण | 8. तादात्मिकरण | 11. विपरीत रचना / मार्गान्तीकरण / |
| 4. प्रतिगमन | 9. दिवास्वपन / मन तरंग / कल्पना | शुद्धिकरण / उदात्तीकरण |
| 5. पृथक्करण | प्रवाह | 12. शोधन |

1. **दमन** – कटु अनुभूतिओं, दुखद बातों व अतृप्त इच्छाओं को बलपूर्वक भुला देना दमन कहलाता है।

2. **शमन** – कष्टदायी बातों का जानबूझकर चेतन अस्वीकरण शमन कहलाता है।

जैसे – दूध उबलने से झड़प हो जाने पर यह कहना कि छोड़ो हुआ सो हुआ।

3. **प्रक्षेपण** – अपनी असफलता का दोष किसी पर भी लगा कर अपने आप को संतुष्ट कर देना। जैसे -

- i. नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
- ii. एक क्रिकेट खिलाड़ी बार-बार अपने बल्ले की तरफ यह संकेत देता है कि उसके ठीक प्रकार से न खेलने का कारण उसका ये बेकार सा बल्ला है।

4. **प्रतिगमन** – जो वर्तमान स्थिति व्यक्ति को तनाव देती है उससे बचने के लिए अपनी पूर्व स्थिति की ओर लौट आना प्रतिगमन कहलाता है। जैसे –

- i. एक व्यस्क का बच्चे की तरह फुट-फुट कर रोना।
- ii. एक लड़की का वापस अपने पीहर आकर अपनी माँ की गोद में सिर रखकर सो जाना।

5. **पृथक्करण** – जो स्थिति व्यक्ति को तनाव देती है उस स्थिति से अपने आप को अलग कर लेना। जैसे –

- i. साथियों द्वारा परेशान किये जाने पर अपना स्थान बदल लेना ।
 - ii. घर में लड़ाई झगड़ा होने पर थोड़ी देर के लिए उठ कर बाहर चले जाना ।
6. **आश्रित होना** – कर्महीन व्यक्ति पूरी तरह दूसरों पर निर्भर होकर समायोजित स्थापित करता है तथा एक असफल व्यक्ति पूरी तरह से सफल व्यक्ति पर निर्भर होकर समायोजन स्थापित करता है ।
7. **विस्थापन** – अपने आक्रोश को किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु पर अभिव्यक्त करना जो कमजोर हो तथा जिससे आक्रमण की उम्मीद ना हो । जैसे-
- i. अध्यापक द्वारा डांट पड़ने पर घर आकर अपने छोटे भाई-बहिनों को पीटना ।
 - ii. माता-पिता द्वारा मार पड़ने पर बगीचे में फूलों को तोड़-तोड़ कर फेंकना ।
8. **तादात्मिकरण / आत्मीकरण** - समायोजन स्थापित करने के लिए व्यक्ति अपना परिचय किसी ऐसे व्यक्ति के साथ ताल-मेल स्थापित करके देता है, जिसे समाज में कोई पद या प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा ऐसे व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का अनुसरण करने लगता है ।
9. **दिवास्वपन** – हकीकत में जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती, कल्पना के माध्यम से उन इच्छाओं की पूर्ति कर क्षणिक संतुष्टि प्राप्त कर लेना । जैसे-
- i. जिनकी शादी नहीं होती वह कल्पना में दूल्हा बना बैड-बाजे की धुन पर नाच रहा होता है ।
 - ii. कार की इच्छा पूरी न होने पर व्यक्ति कल्पना में गाड़ी पर घूमकर अपनी प्रेमिका के साथ लोगो की सलामी ले रहा होता है ।
10. **औचित्य स्थापन** – किसी भी कारण से जो पद या वस्तु प्राप्त नहीं हो पाती है, उसी में दोष निकालकर समायोजन स्थापित करना तथा अपनी दयनीय स्थिति को उचित बताना । जैसे – अंगूर खट्टे , नींबू मीठे ।
11. **विपरीत रचना / मार्गान्तीकरण / शुद्धिकरण / उदात्तीकरण** – कभी-कभी व्यक्ति की इच्छाएँ व आवश्यकताएँ इस प्रकार की होती हैं कि उन्हें सामाजिक रूप से व्यक्त करना व्यक्ति के हित में नहीं होता इससे उसके सम्मान को ठेस पहुँचने का खतरा होता है, इस लिए व्यक्ति विपरीत रचना रचकर समायोजन स्थापित करता है । जैसे –
- i. एक सौतेली माँ अपनी सौतेली बेटी के प्रति नफ़रत को अपने अन्दर बंद करती है तथा इसके विपरीत प्यार का प्रदर्शन करती है ।
 - ii. बुजुर्गों के प्रति सम्मान भावना नहीं होने पर भी सम्मान प्रकट करना ।

12. **शोधन** – असामाजिक प्रवृत्तियों को सामाजिक प्रवृत्तियों में परिवर्तित कर समायोजन स्थापित करना | जैसे –

- i. एक बालक जो लड़ाई-झगडा करता है तथा निर्भीक व बहादुर, उसका खिलाड़ी, मुक्केबाज, या पहलवान आदि के रूप में प्रतिष्ठित होना |
- ii. तुलसीदास जी की अपनी पत्नी रत्नावती के प्रति आशक्ति ,राम आशक्ति में बदलना व राम चरित मानस लिखना |

क्षतिपूर्ति उपाय -

जिस क्षेत्र में व्यक्ति कमजोर है उसकी क्षतिपूर्ति किसी अन्य क्षेत्र या साधन के माध्यम से कर समायोजन स्थापित करना | जैसे –

- i. शारीरिक रूप से विकलांग बालक कक्षा में प्रथम स्थान लाकर समायोजन स्थापित करता है |
- ii. कम लम्बाई वाली लड़की ऊँची सेंडिल पहनकर समायोजन स्थापित करती है |

आक्रामक उपाय -

अपने क्रोध को हिंसात्मक तरीके से अभिव्यक्त करना आक्रामकता कहलाती है | यह दो प्रकार कई होती है – रक्षक व भक्षक

किसी के अनुचित व्यवहार व असामाजिक तत्वों के प्रति आक्रामक रुख अपनाकर अपनी रक्षा करने में कहीं कोई बुराई नहीं है लेकिन अनावश्यक रूप से किसी को चोट पहुँचाना व उसका शोषण करना उचित नहीं है ,इससे अपराध भावना का जन्म होता है तथा क्रोध के वशीभूत व्यक्ति भक्षक बनकर केवल दुसरो का ही नुकसान नहीं करता अपितु स्वयं का भी नुकसान करता है |

समायोजन प्रतिमान -

- ✍ सिगमण्ड फ्राण्ड के अनुसार – अचेतन मन, इगो व लिबिडो प्रवृत्ति समायोजन का आधार है |
- ✍ एडलर के अनुसार – श्रेष्ठता प्राप्ति समायोजन का आधार है |
- ✍ दिल (भावना) व दिमाग (विचार) में संतुलन बनाये रखना ही आत्मसिद्धि है |

स्वप्न -

- ✍ सिगमण्ड फ्राण्ड के अनुसार – स्वप्न अचेतन मन का प्रतिरूप है |
- ✍ एडलर के अनुसार – स्वप्न चेतन मन का प्रतिरूप है |
- ✍ जुंग के अनुसार – स्वप्न, चेतन, अचेतन व अर्द्धचेतन तीनों का प्रतिरूप है |
- ✍ नोट - सिगमण्ड फ्राण्ड के विचारों को प्रमुखता दी जाती है |

⇒ एड्लर के अनुसार स्वप्न चेतन मन का प्रतिरूप है।

⇒ ज़ुंग के अनुसार स्वप्न, चेतन, अचेतन व अर्द्धचेतन तीनों का प्रतिरूप है।

Note:- सिगमंड फ्रॉयड के विचार को प्रमुखता दी जाती है।

शिक्षार्थी का विकास

(Development of the learner)

अभिप्लवद्धि व विकास में अन्तर:-

अभिप्लवद्धि

विकास

- | | |
|---|--|
| 1. संकुचीत अर्थ | व्यापक अर्थ |
| 2. बाह्य स्वरूप | बाह्य व आन्तरिक स्वरूप |
| 3. केवल शारीरिक पक्ष में होने वाला परिवर्तन | सम्पूर्ण पक्षों में होने वाला परिवर्तन |
| 4. कुछ समय पश्चात् रुक जाना | जीवनपर्यन्त चलना |
| 5. केवल आकार बढ़ने से सम्बन्ध | सम्पूर्ण परिवर्तनों से सम्बन्ध |

- | | | |
|----|-----------------------------------|--------------------------------|
| 6. | सीधे नापा तौला जा सकता है। | सीधे मापन संभव नहीं |
| 7. | परिणात्मक / संख्यात्मक मात्रात्मक | परिमाणात्मक व गुणात्मक |
| 8. | रचनात्मक परिवर्तन | रचनात्मक व विनाशात्मक परिवर्तन |
| 9. | विवृद्धि सूचक | विवृद्धि व हास सूचक |

⇒ श्रीमती हरलोक ने विकास क्रम में होने वाले परिवर्तनों को चार भागों में बाँटा।

1. आकार में परिवर्तन
2. अनुपात में परिवर्तन
3. पुराने चिन्हों का लोप
4. नवीन चिन्हों का उदय

विकास के नियम :-

1. समान प्रतिमान का नियम:-

विकास समान नियमों पर आधारित होता है इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता।

2. क्रमबद्धता का नियम / निश्चित शृंखला का नियम:-

विकास क्रमानुसार होता है।

3. सतत विकास का नियम / निरन्तरता का नियम:-

विकास जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

4. परस्पर सम्बन्ध का नियम:-

विकास के चारों पक्ष (क्रम - 1) शारीरिक 2) मानसिक 3) सामाजिक व 4) संवेगात्मक) परस्पर सम्बन्धित होते हैं लेकिन धनिष्ठ सम्बन्ध शारीरिक व मानसिक विकास में होता है।

5. सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं का नियम:-

पहले सामान्य क्रियाएँ करती हैं व उसके बाद विशिष्ट क्रियाएँ

6. निश्चित दिशा का नियम / मस्तबोध मुख्य नियम:-

विकास हमेशा सिर से पैर की ओर होता है।

7. व्यक्तिगत विभिन्नता का नियम:-

जन्म से ही कोई बालक प्रतिभाशाली होता है, कोई सामान्य बुद्धि का होता है तो कोई मन्द बुद्धि होता है।

8. विकास की गति में भिन्नता का नियम:-

प्रतिभाशाली बालक का विकास तीव्र गति से। सामान्य बुद्धि बालक का सामान्य गति से व मन्द बुद्धि बालक का विकास मन्द गति से होता है।

9. अन्तःक्रिया का नियम:-

देखकर, सुनकर व अनुकरण से सिखना।

10. निकट-दूर नियम:-

विकास केन्द्र (मस्तिष्क) से सिरों (शरीर के भाग) की ओर होता है।

11. वर्तुलाकार का नियम:-

विकास केन्द्र केवल लम्बाई में ना होकर चारों ओर होता है।

12. वंशानुक्रम व वातावरण के गुणनफल का नियम:-

व्यक्ति के विकास पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है।

व्यक्ति का विकास इन दोनों का प्रतिकूल है।

$$\text{व्यक्ति} = H (\text{वंशानुक्रम}) \times E (\text{वातावरण})$$

विकास की अवस्थाएँ

1. शैशवावस्था:- जन्म से 6 वर्ष तक

2. बाल्यावस्था:- 7-12 वर्ष तक

3. किशोरावस्था:- 13-18 वर्ष तक

4. प्रौढ़ावस्था:- 18 के बाद

शैशवावस्था:-

शैशवावस्था को निम्न नामों से जाना जाता है।

1. जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल।
2. भावी जीवन की आधारशिला।
3. सीखने का आदर्श काल।
4. खेलों की आयु।
5. सीखने की आयु।
6. संस्कारों के निर्माण की अवस्था।
7. अमार्कटिक चिन्तन की अवस्था।
8. प्रिय लगाने वाली अवस्था।
9. मन की मौजों में विचरण करने की अवस्था।
10. पराधिनता की अवस्था।
11. पूर्वविद्यालयी आयु / नर्सरी स्कूल की आयु।

शैशवावस्था के अवस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ :-

Note:- सर्वप्रथम विकासात्मक कार्य का समप्रत्यय है किहार्स्ट के द्वारा दिया गया।

1. शारीरिक व मानसिक विकास तीव्र गति से।
2. सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता।
3. जिज्ञासा प्रवृत्ति।
4. अनुकरण द्वारा सीखना।
5. दूसरों पर निर्भर।
6. दूसरी शिशुओं के प्रति रुची।
7. दोहराने की प्रवृत्ति।
8. संवेगों का प्रदर्शन।

मूल प्रवृत्त्यात्मक व्यवहार।

नैतिक व सामाजिक भावना का अभाव।

न तो सामाजिक और न असामाजिक।

रक्त या दो मित्र व क्षणिक मित्रता।

स्वार्थी व स्वकेन्द्रित।

अपनी संवेदनाओं (बौद्धिक) व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सिखना।

काम प्रवृत्ति (सिग्माण्ड फ्रायड के अनुसार)

सीमित मात्रा में कल्पना।

बाल्यावस्था :- 7-12 वर्ष का काल

बाल्यावस्था के निम्न नामों से जाना जाता है।

1. निर्माणकारी काल।

2. अनोखा काल।

3. प्रारम्भिक विद्यालय की आयु।

4. शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण काल।

5. वैचारिक क्रिया अवस्था।

6. गैंग आयु (टोली / दल / समुह की आयु)

7. मिथ्या मिथ्या / छुदम परिपक्वता का काल।

8. प्रतिद्वन्द्वतात्मक सामाजीकरण का काल।

9. खेल की आयु।

10. मूर्तचिन्तन की अवस्था आदि।

(प्रत्यक्ष)

बाल्यावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ :-

1. शारीरिक व मानसिक विकास में स्थिरता।

2. विज्ञान प्रवृत्ति का विकास।

3. यथार्थवादी दृष्टिकोण।

4. रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास।
5. निरउद्देश्य भ्रमण करने की प्रवृत्ति।
6. संग्रह करने की प्रवृत्ति।
7. चोरी करना व झूठ बोलना।
8. भाई-बहिनो में झगड़ा।
9. पंजासा पाने की इच्छा।
10. हिन भावना का शिकार।
11. प्रतिस्पर्धा की भावना।
12. पक्षपात की भावना का शिकार।
13. स्वैंगों पर नियन्त्रण।
14. नैतिक व सामाजिक भावना का विकास।
15. संवेगात्मकता में सामाजिकता का विकास।
16. जाति भेद, अर्थ भेद व लिंग भेद।
17. समलिंगीय समूह भावना।
18. नैरा बनने की इच्छा।
19. खोखली मित्रता।
20. भाषा एवं सम्प्रेषण योग्यता का विकास।
21. खेलों में रुचि।
22. मूर्त चिन्तन की योग्यता आदि।

किशोरावस्था (Adolescence)

13-18 वर्ष का काल

किशोरावस्था पर क्रमबद्ध व व्यवस्थित अध्ययन अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **स्टैनली हॉल** के द्वारा किया गया। इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **Adolescence** (एडोलसेंस) के अन्तर्गत 1904 में किशोरावस्था के एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

किशोरावस्था के सिद्धान्त:-

त्वरित विकास का सिद्धान्त:-

प्रवर्तक - स्टैनली हॉल

इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में विकास अकस्मात होता है।

क्रमिक विकास का सिद्धान्त:-

प्रवर्तक:- थॉमस हॉलिंगवर्थ

इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में विकास अकस्मात न होकर धीरे-धीरे अर्थात् क्रमानुसार होता है।

किशोरावस्था को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है:-

1. पूर्व किशोरावस्था [Early Adolescence]
वयः सन्धि

2. उतर किशोरावस्था / परिपक्वावस्था [Later Adolescence]
[Maturity] - 16-18 वर्ष

किशोरावस्था को निम्न नामों से जाना जाता है:-

1. जीवन का सबसे कठिन काल।
1. आँधी तूफान की अवस्था।
2. तनाव संघर्ष की अवस्था।
3. उथल-पुथल व अंशभावत की अवस्था।
4. समस्याओं की आधु।
5. द्रुत एवं तीव्र विकास की अवस्था।
6. तार्किक चिन्तन की अवस्था।
- 7.

8. स्वर्णकाल ।
9. वसंत ऋतु ।
10. परिवर्तन की अवस्था ।
11. परिवर्ती अथवा संक्रमण की अवस्था ।
12. अस्थिर व्यक्ति की स्थिति की अवस्था ।
13. विशिष्टता की खोज का समय :-
उसने रडिकसन ने
अहम विशिष्टता की समस्या कहा है ।
14. षोडशवस्था अथवा वयस्क अवस्था की पहली ।

किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ :-

1. चहुँमुखी विकास अर्थात् शारीरिक, मानसिक सामाजिक व समायोजन या सैवगात्मक विकास ।
2. बुद्धि का अधिकतम विकास ।
3. कल्पना का बाहुल्य ।
4. व्यक्तिगत व दानिष्ठ मिश्रण ।
5. दिवास्वप्न की प्रवृत्ति ।
6. वीरपूजा / नायक पूजा की प्रवृत्ति ।
7. आत्म सम्मान की महत्व ।
8. पीढ़ियों में अन्तर के कारण विचारों में मतभेद ।
9. समायोजन का अभाव ।
10. मानसिक स्वतन्त्रता व विद्रोह की स्थिति ।
11. अपराध प्रवृत्ति का विकास ।
12. स्वतंत्र सौच का विकास ।
13. ईश्वर तथा धर्म में विश्वास या अविश्वास ।
14. समाजसेवा व देशभक्ति की भावना ।
15. स्वतंत्र निर्णय क्षमता ।

समवयस्क समूह भावना (Peer group)

समलिगिच व विषमलिगिच समूह भावना ।

नैतृत्व का विकास ।

विचारों व संवेगों में परिपक्वता ।

अपनी से विद्युद्भि का गम ।

संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से ।

रुचियों में परिवर्तन ।

अमूर्त चिन्तन करने की योजना ।

काम प्रवृत्ति

आत्मप्रेम

समलिगिचप्रेम

विषमलिगिचप्रेम

आत्मनिर्भर बनने की इच्छा ।

व्यवसाय चुनाव की चिन्ता ।

आत्मचेतना की भावना ।

स्वपहचान (अपने आप को पहचानना)

आत्म सम्प्रत्य की भावना (अपने आप को पहचानना)

समस्यात्मक बालक ।

आत्मनिर्भरता बनाम निर्भरता ।

आदर्शवाद बनाम यथार्थवाद ।

अध्ययन के प्रति गम्भीर ।

विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण ।

मादक पदार्थों का सेवन करने की समस्या ।

वित्तिय समस्या ।

आत्महत्या की समस्या ।

Most:- विकास के सिद्धान्त

1. संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त - जीन पिथाजे
2. संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त:- वाइगोत्स्की
3. मनोवैज्ञानिक विकास सिद्धान्त:- सिगमण्ड फ्रायड
4. मनो सामाजिक विकास सिद्धान्त:- एरिकसन
5. नैतिक विकास सिद्धान्त:- लौरेंस कॉहलवर्ग
6. भाषा विकास सिद्धान्त:- नाम चॉमस्की

Most:- संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त:-

संज्ञानात्मक पक्ष पर क्रमबद्ध व व्यवस्थित अध्ययन स्वीजरलैण्ड के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन पिथाजे द्वारा किया गया।

संज्ञान प्राणी का वह व्यापक और स्थाई ज्ञान है जिसे वह वातावरण (उद्दीपक, जगत) के माध्यम से ग्रहण करता है।

संज्ञान के अन्तर्गत अवधान, चिन्तन, स्मरण, कल्पना, तर्क-वितर्क, निरिक्षण, वर्गीकरण, समस्या समाधान, समप्रत्ययीकरण (विचारों का निर्माण), प्रत्यक्षण (देखना) आदि मानसिक क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं।

ये क्रियाएँ परस्पर अन्तः सम्बन्धित होती हैं।

⇒ जिन पिथाजे ने संज्ञानात्मक पक्ष पर बल देते हुए संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसलिए जिन पिथाजे को **विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक** माना जाता है।

⇒ विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत शुरु से अन्त अर्थात् गर्भावस्था से वृद्धावस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है।

⇒ बाल विकास के अन्तर्गत गर्भावस्था से किशोरावस्था अथवा परिपक्वा अवस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है।

⇒ विकास प्रारम्भ होता है गर्भावस्था से।

⇒ संज्ञान विकास बीशवास्था से प्रारम्भ होकर जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

⇒ जिन पिथाजे ने संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त को **4 अवस्थाओं** के आधार पर समझाया है।

संवेदी-प्रेक्षीय अवस्था / इन्दीय जनीत अवस्था

(Sensory ~~motor~~ Motor stage): - 0-2 वर्ष

जन्म के समय शिशु बाह्य जगत के प्रति अनभिज्ञ होता है और 2 आयु वृद्धि के साथ 2 वह अपनी संवेदनाओं (जानेन्द्रियों) व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है।

वह वस्तुओं को देखकर सुनकर, स्पर्श करके, गंध के द्वारा व स्वाद के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है।

- ⇒ छोटे-2 शब्दों को बोलने लगता है। तथा वस्तु स्थायित्व (Object Permanence) का अभाव पाया जाता है।

2. पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)

इस अवस्था में बालक दूसरों के सम्पर्क से, खिलौनों से व अनुकरण के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है। खिलौनों की आयु इसी अवस्था को कहा जाता है।

- ⇒ बालक अक्षर लिखना, गिनती गिनना, रंगों को पहचानना, वस्तुओं को कम से रखना, हल्के-भारी का ज्ञान होना, माता-पिता की आज्ञा मानना, पूछने पर नाम बगना, घर के छोटे-छोटे कार्यों में मदद करना आदि सीख जाता है।

- ⇒ लेकिन वह तर्क-वितर्क करने योग्य नहीं होता। इसलिए इसे **अतार्किक चिंतन की अवस्था** के नाम से भी जाना जाता है।

- ⇒ बालक निर्जिव वस्तुओं में सजीव चिंतन करने लगता है इसे **जीववाद** कहते हैं।

- ⇒ वस्तु स्थायित्व का भाव जागृत हो जाता है।

- ⇒ **प्रतीकात्मक चिंतन** (Symbolic thinking) का विकास हो जाता है।

3) बालक अहमवादी होता है तथा दूसरों को कम महत्व देता है।

अनुक्रमशीलता (Irreversibility) पाई जाती है।

3. मूर्त / स्थूल संचियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage): - 7-12 वर्ष

इस अवस्था में बालक तार्किक चिन्तन करने योग्य हो जाता है लेकिन उसका चिन्तन केवल मूर्त वस्तुओं तक ही सीमित रहता है। वह अपने सामने उपस्थित दो वस्तुओं के बीच अन्तर करना, तुलना करना, समानता व असमानता बताना, सही-गलत व उचित-अनुचित में विभेद करना आदि सीख जाता है। इसीलिए इसे मूर्त चिन्तन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।

3) बालक दिन, तारीख, समय, महिना, वर्ष आदि बताने योग्य हो जाता है।

3) भाषा एवं सम्प्रेषण योग्यता का विकास हो जाता है।

3) अनुक्रमशीलता (पलावती अवस्था / Reversibility) पाई जाती है।

4. औपचारिक संचियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage): - 12 वर्ष के बाद

इस अवस्था में बालक मूर्त के अलावा अमूर्त चिन्तन करने योग्य भी हो जाता है। इसलिए इसे तार्किक चिन्तन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।

इस अवस्था में मानसिक योग्यताओं का पूर्ण विकास हो जाता है।

परिचल्पना चिन्तन पाया जाता है।

3)

जीन पिघाजे का शिक्षा में योगदान:-

1. जीन पिघाजे ने संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
2. बाल वैज्ञानिक शिक्षा पर बल दिया।
3. जीन पिघाजे शिक्षा में बालक की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहते हैं कि-
 - (i) एक बालक को बालक की समस्या का निदान करना चाहिए।
 - (ii) बालक के अधिगम के लिए उचित वातावरण तैयार करना चाहिए।
4. जीन पिघाजे ने बुद्धि को जीव विज्ञान के स्कीमा की भांति ~~ब~~ बखलाकर बुद्धि की एक नवीन व्याख्या प्रस्तुत की।
5. जीन पिघाजे ने आत्मीकरण, समन्वयन, संतुलीकरण व स्कीमा जैसे नवीन शब्दों का प्रयोग कर शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

स्कीमा शब्द जीव विज्ञान से लिया गया है।

स्कीमा:-

वातावरण द्वारा अर्जित सम्पूर्ण ज्ञान का संगठन ही स्कीमा है।

जब व्यक्ति के सामने कोई उद्दीपक उपस्थित होता है तो उसकी सभी मानसिक क्रियाएँ अलग-2 कार्य न करके एक साथ संगठित होकर कार्य करती हैं।

मानसिक संरचना की व्यवहारगत समान्तर प्रक्रिया जीव विज्ञान में स्कीमा कहलाती है। अर्थात् किसी उद्दीपक के प्रति विश्वसनीय अनुक्रिया को स्कीमा कहते हैं।

संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त :-

वाइगोत्स्की द्वारा प्रतिपादित वाइगोत्स्की का मानना है बालक के संज्ञानात्मक विकास पर सामाजिक कारकों व भाषा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है इसीलिए इस सिद्धान्त को सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है।

वाइगोत्स्की का मानना है कि संज्ञानात्मक विकास अन्तर वैयक्तिक सामाजिक परिस्थिति (Interpersonal Social Situation) में सम्पन्न होता है। अर्थात् कुशल व विद्वान व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया के माध्यम से संज्ञानात्मक विकास होता है। इसीलिए इस सिद्धान्त को समीपस्थ विकास का क्षेत्र भी कहा जाता है। (Zone of proximal development)

3. मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त :- (Psycho - Sexual development theory) :- सिग्मण्ड फ्रायड सिग्मण्ड फ्रायड के अनुसार बालक के विकास पर उसकी काम प्रवृत्ति का व्यापक प्रभाव पड़ता है। उनके अनुसार काम प्रवृत्ति बालक में जन्म से पाई जाती है तथा भिन्न-2 अवस्थाओं में इसका स्वरूप भिन्न-2 होता है।

इस आधार पर सिग्मण्ड फ्रायड ने मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त को पाँच अवस्थाओं के आधार पर समझाया है।

① मुखीय अवस्था (Oral Stage) :- 0-1 वर्ष इस पहली अवस्था में काम प्रवृत्ति मुख के क्षेत्र में केन्द्रित होती है।

② **गुदीय अवस्था: (Anal Stage):** - 1-3 वर्ष

इस अवस्था में काम प्रवृत्ति गुदा क्षेत्र में केन्द्रित होती है। इस अवस्था में शिशु जिद्दी, आक्रामक व चारणात्मक हो जाता है।

③ **लैंगिक अवस्था: (Phallic Stage):** - 3-6 वर्ष

इस अवस्था में बालक का ध्यान जननांगों की तरफ जाता है। इसी अवस्था में आडिप्स व एलैक्टा ग्रन्थि का विकास होता है।

④ **अदृश्यावस्था / प्रसुप्ति अवस्था (Latency Stage)**
7-12 वर्ष

इस अवस्था में काम प्रवृत्ति अदृश्य हो जाती है यह शरीर के किसी भी भाग में विद्यमान नहीं होती।

⑤ **जननैन्द्रिय अवस्था (Genital Stage):** - 12 के बाद

इस अंतिम अवस्था में काम शक्ति का प्रयोग संगमोत्पत्ति हेतु किया जाता है।

4. **मनो-सामाजिक विकास सिद्धान्त (Psycho-social development theory):** एरिक्सन

एरिक्सन को नव्य फ्रायडवादी माना जाता है। क्योंकि एरिक्सन सिगमण्ड फ्रायड के विचारों से काफी हद तक सहमत थे। लेकिन एक बात पर सहमत

नहीं थे। एरिक्सन का मानना है कि बालक के विकास पर उसकी काम प्रवृत्ति का नहीं बल्कि सामाजिक अनुभूतियों का प्रभाव पड़ता है।

इस आधार पर उन्होंने मनो-सामाजिक विकास सिद्धान्त को आठ अवस्थाओं के आधार पर समसाया है।

1. 0-2 :- विश्वास की अवस्था।
2. 3-4 :- स्वतन्त्रता संदेह की अवस्था।
3. 5-6 :- आत्मबल - अपराधभाव की अवस्था।
4. 7-12 :- परिष्कृत - हीनता की अवस्था।
5. 13-18 :- पहचान - भूमिका द्वन्द्व की अवस्था।
6. 19-35 :- उत्पादकता निष्क्रियता की अवस्था।
7. 36-55 :- ईमानदारी निशाब्दा की अवस्था।
8. 55 के बाद :- ध्वनिष्ठता अलगव की अवस्था।

5. नैतिक विकास सिद्धान्त (Moral development theory) लॉरेन कोहलबर्ग

लॉरेन कोहलबर्ग का मानना कि बालक के नैतिक विकास को समझने के लिए उसके तर्क व चिन्तन का विश्लेषण करना अनिवार्य है।

इस आधार

पर उन्होंने नैतिक विकास सिद्धान्त की छः अवस्थाएं बताई हैं। तथा इन्हें तीन स्तरों में बाँटा है।

(1) **प्री-कन्वेंशनल स्तर / पूर्व परम्परागत स्तर:-**
4-10 वर्ष

इस स्तर में बालक के तर्क व चिन्तन का आधार बाहरी घटना होती है। बालक बाहरी घटना के आधार पर किसी को सही व गलत या उचित व अनुचित बताता है। इस स्तर की दो अवस्थाएँ हैं।

- (1) अना एवं दण्ड की अवस्था
- (2) अहंकार की अवस्था / अदना बदली की अवस्था

(2) **कन्वेंशनल स्तर / परम्परागत स्तर:-**
10-13 वर्ष

इस स्तर में बालक के तर्क व चिन्तन का आधार सामाजिक होता है। इस स्तर की दो अवस्थाएँ हैं।

- (1) प्रशंसा की अवस्था
- (2) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था या उत्तम लड़का अच्छी लड़की की अवस्था।

(3) **पोस्ट कन्वेंशनल / पश्च परम्परा स्तर:-**
13 के बाद

इस स्तर में बालक के तर्क व चिन्तन का आधार विवेक होता है। इसकी दो अवस्थाएँ हैं।

- (1) सामाजिक समझौते की अवस्था।
- (2) विवेक की अवस्था।

लॉरेन्स कोहलबर्ग ने नैतिक विकास सिद्धान्त की पाँच अवस्थाएँ और बताई हैं।

1. पूर्व नैतिक अवस्था (Annomal Stage) 0-2 वर्ष

2. स्वकेन्द्रित अवस्था (Self Center Stage) 2-7 वर्ष

3. परम्पराओं को धारण करने वाली अवस्था (Conforming Conventional Stage) 7-12 वर्ष

इसी अवस्था से बालक का नैतिक अथवा न्यायनैतिक विकास प्रारम्भ होता है।

4. आधारहीन आत्मचिन्ता अवस्था (Immotional Conscience Stage) 13-18 वर्ष

इस अवस्था में किशोर आधारहीन व खोखले आदर्शों की बातें करता है जो उसे वास्तविकता के धरातल से दूर ले जाते हैं इस अवस्था में किशोरो का व्यक्तित्व सिगमंड फ्रॉयड के सुपर ईगो द्वारा संचालित होता है।

इस अवस्था के व्यक्ति के देवदूत (An Angel in a Person) माना जाता है।

5. आधारयुक्त आत्म-चिन्ता अवस्था (Rational Conscience Stage) 18 के बाद

इस अवस्था में व्यक्ति की बातें आधारयुक्त व तर्क समर होती हैं।

व्यक्ति केवल भावनाओं से ही नहीं बल्कि विचारों से भी काम लेता है।

भाषा विकास

पावलॉव के अनुसार:-

बालक भाषा अनुबन्धन के माध्यम से सीखता है।

स्किनर के अनुसार:-

बालक भाषा अनुकरण व पुनर्वसन के माध्यम से सीखता है।

अलबर्ट बान्डुरा:-

बालक भाषा अनुकरण के माध्यम से सीखता है।

बान्डुरा ने भाषा विकास में पुनर्वसन को महत्व नहीं दिया।

6. नॉम-चॉमस्की का भाषा विकास सिद्धान्त:-

नॉम-चॉमस्की का मानना है कि बालक में भाषा ग्रहण करने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है जिसे भाषा अधिजनन तंत्र (LAD - Language Acquisition Device) के नाम से जाना जाता है।

- बालक जिस भाषा को सुनता है उसकी व्याकरण को अपने आप सीख जाता है। इसीलिए इस

सिद्धान्त को जैनेरेटिव ग्रामर थ्योरी के नाम से जाना जाता है।

शारीरिक विकास

क्रौं या क्रौं के अनुसार :-

मनुष्य सर्वप्रथम एक शारीरिक प्राणी है उसकी शारीरिक संरचना उसके व्यवहार व दृष्टिकोण का आधार है अतः शारीरिक विकास के सभी पक्षों का अध्ययन करना आवश्यक है।

शारीरिक विकास के चक्र :-

शारीरिक विकास के चार चक्र हैं।

प्रथम चक्र :- 0-3 वर्ष
विकास तीव्र गति से

द्वितीय चक्र :- 3-12 वर्ष
विकास मंद गति से

तृतीय चक्र :- 13-15 वर्ष
पुनः तीव्र गति से

चतुर्थ चक्र :- 16-18 वर्ष
पुनः मंद गति से

लम्बाई :-

शैशवावस्था में लड़कों की लम्बाई अधिक बाल्यावस्था में लगभग बराबर और यदि अधिक होती है तो लड़कियों की किशोरावस्था में लड़कों की लम्बाई अधिक।

लड़कियों की लम्बाई 16 वर्ष तक बढ़ती है।
जबकि लड़कों की लम्बाई 18 वर्ष के बाद भी
बढ़ती रहती है।

भार :-

शैशवावस्था में लड़कों का भार अधिक।
बाल्यावस्था में लगभग बराबर और यदि अधिक होगा
तो लड़कियों का।

किशोरावस्था में लड़कों का भार अधिक
क्योंकि लड़कों की हड्डियाँ अधिक मजबूत होती हैं।

हड्डियाँ :-

शैशवावस्था में हड्डियों की संख्या 270 से 300
के बीच होती है।

ये हड्डियाँ कौमल तथा लचीली होती हैं।
बीरे-2 ये हड्डियाँ आपस में जुड़ना प्रारम्भ होती हैं।
इस क्रिया को अस्थिरता या दृढीकरण की क्रिया कहते हैं।

किशोरावस्था में अस्थिकरण की क्रिया पूर्ण
हो जाती है तथा हड्डियों की संख्या 206 रह जाती है।

किशोरावस्था में भुजाओं व टाँगों की हड्डियों में
वृद्धि होती है।

दोँत :-

दोँत निकलने की प्रक्रिया का आरम्भ गर्भाशय
से ही होता है। जन्म के समय शिशु के दोँत नहीं
होते हैं। इन्हें या छहठे माह से दूध के दोँत निकलना
प्रारम्भ हो जाते हैं।

सब वर्ष में लगभग आठ दाँत तथा 4 वर्ष तक दूध के पूरे 20 दाँत निकल आते हैं। उसके बाद दूध के दाँत गिरना शुरू होते हैं। तथा पाचवें या छठवें वर्ष से स्थायी दाँत निकलना शुरू होते हैं। 12-13 वर्ष तक दोनों की संख्या 27 से 28 होती है।

किशोरावस्था के अंत अथवा प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ में **प्रज्ञा दाँत (Wisdom teeth)** निकलते हैं। इनकी संख्या 4 होती है।

स्थायी दाँत = 18

अस्थायी दाँत = 20

कुल दाँत = 32

मस्तिष्क :-

शिशु अवस्था में मस्तिष्क का भार लगभग 350 ग्राम बाल्यावस्था में 1260 ग्राम किशोरावस्था में 1260-1400 ग्राम के बीच होता है।

छाड़कन :-

जन्म के समय शिशु के छाड़कन 1 मिनट में लगभग 140 बार 6 वर्ष की आयु तक 100 बार 12 वर्ष की आयु तक 85 बार तथा किशोरावस्था में 72 बार छड़कती है।

खिलौनों की आयु

- (1) शिशु अवस्था ✓
- (2) बाल्यावस्था
- (3) किशोरावस्था
- (4) प्रौढ़ावस्था

0-2 खिलौनों की आयु

- (1) संवेदी पेशीय अवस्था
- (2) मूल संक्रियात्मक
- (3) पूर्व संक्रियात्मक ✓
- (4) औपचारिक संक्रियात्मक

खिलौनों की आयु

- (1) 0-2 वर्ष
- (2) 2-7 वर्ष ✓
- (3) 7-12 वर्ष
- (4) 12 के बाद

दैवदुत - 13-18

0.4 खिलौनों की आयु

- (1) शैशवावस्था (0-2) (2) पूर्व बाल्यावस्था (2-7)
- (3) पूर्व किशोरावस्था (13-15) (4) उमरावस्था (16-18)
- (5) उमर बाल्यावस्था (17-12)

→ उमर समस्या की आयु (परेशानियों की आयु)

बुद्धि (Intelligence)

1885 में सर्वप्रथम फ्रांसिस गाल्टन के द्वारा बुद्धि शब्द का प्रयोग किया गया।

1890 में **केटल** ने पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय में Mental Test and Measurement (मानसिक परीक्षण व मापन) नामक पुस्तक का प्रकाशन किया।

1890 में ही **केटल** ने मानसिक परीक्षण शब्द का प्रयोग किया।

1905 में सबसे पहला बुद्धिपरीक्षण फ्रांस के निवासी **अल्फ्रेड बिने** ने साइमन की मदद से तैयार किया जिसका नाम था **बिने साइमन बुद्धि परीक्षण**।

1908 में अल्फ्रेड बिने ने मानसिक आयु शब्द का प्रयोग किया।

1912 में सर्वप्रथम **स्टर्न व कुलहमन कुलमान** के द्वारा बुद्धिलब्धी का सुझाव दिया गया।

$$I.Q = \frac{M.A}{C.A} \quad \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}}$$

1916 में **टरमन** के द्वारा बुद्धिलब्धि का संशोधित सूत्र दिया गया।

$$I.Q. = \frac{M.A}{C.A} \times 100$$

बुद्धि की विशेषताएँ :-

बुद्धि एक जन्मजात शक्ति अथवा योग्यता है।
बुद्धि एक विकासशील या परिवर्तनशील योग्यता है।
बुद्धि पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है।
बुद्धि पर मुख्य प्रभाव वंशानुक्रम का पड़ता है तथा वातावरण का प्रभाव केवल 10 बिन्दुओं तक पड़ता है।
लिंगभेद व जाति विरोध पर बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
बुद्धि एक इकाई न होकर अनेक इकाइयों का समुह है।
उचित प्रकार से उत्तर देने, तर्क-वितर्क करने चिन्तन करने निरीक्षण करने आदि की योग्यता ही बुद्धि है।
प्रत्येक वातावरण में समायोजन स्थापित कर लेना ही बुद्धि है।
अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता ही बुद्धि है।
अमूर्त चिन्तन करने की योग्यता ही बुद्धि है।
बुद्धि की लम्बवत् वृद्धि (Vertical Growth) 16-18 वर्ष तक होती है। जबकि क्षैतिज वृद्धि (Horizontal Growth) जीवनपर्यन्त चलती रहती है।

बुद्धि वर्गीकरण :

थार्नहाइक व गैर्रेट ने बुद्धि के तीन प्रकार वर्गीकृत किए।

1. **पूरु बुद्धि (Concrete Intelligence / Practical Intelligence) :-**

इस बुद्धि को गामक या यांत्रिक बुद्धि भी कहते हैं।
इस बुद्धि का सम्बंध गणों और मशीनों से होता है।

2. **आमूर्त बुद्धि (Abstract Intelligence):** इस बुद्धि का सम्बंध चिन्हों, प्रतीकों व पुस्तकीय ज्ञान से होता है।

3. **सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence):** इस बुद्धि का सम्बंध सामाजिक अनुकूलन क्षमता से होता है।
व्यवहारिक बुद्धि को सामाजिक बुद्धि भी कहते हैं।
यदि व्यावहारिक बुद्धि का English नाम Practical Intelligence दिया हो तो उस मूल बुद्धि होगा।

बुद्धि के सिद्धान्त:-

1. **एक तत्व सिद्धान्त (Unit-factor Theory)**
[सामान्य तत्व]

प्रवर्तक:- अल्फ्रेड बिने

यह सिद्धान्त मान्य नहीं हुआ तथा इस सिद्धान्त को मिरकुंशवादी सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है।

2. **द्वि-तत्व सिद्धान्त (Two factor Theory)**

प्रवर्तक:- स्पीयरमैन

(1) सामान्य तत्व (G) :- जन्मजात

(2) विशिष्ट तत्व (S) :- अधिष्ट

स्पीयरमैन के अनुसार सामान्य तत्व के सम्पर्क में जो भी विशिष्ट तत्व जितना अधिक आता है व्यक्ति उसी क्षेत्र में प्रगति करता है।

बाद में स्पीयरमैन ने एक और तत्व (समूह तत्व) जोड़ दिया तथा सिद्धान्त कहलाया - **त्रि तत्व सिद्धान्त**।

3. बहु तत्व सिद्धान्त (Multi factor Theory) :-

प्रवर्तक - थार्नडाइक

थार्नडाइक के अनुसार व्यक्ति जितनी भी मानसिक क्रियाएं करता है उन्हीं तत्व बुद्धि के अन्तर्गत पाये जाते हैं।

थार्नडाइक ने अपने सिद्धान्त की तुलना बालु के ढेर से करते हुए ऊंचाई, चौड़ाई, क्षेत्रफल व गति की चर्चा की है। और इस आधार पर सिद्धान्त कहलाया - **बालुका सिद्धान्त / परमाणुवादी सिद्धान्त**।

4. समूह तत्व सिद्धान्त (Group factor theory) :-

प्रवर्तक - थर्स्टन

थर्स्टन ने कई कारकों का विश्लेषण करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि सात मानसिक योग्यताओं का समूह ही बुद्धि है :-

(1) प्रज्ञा योग्यता :- गहराई से देखना

(2) अंक योग्यता

(3) वाचिक योग्यता

(4) वाक् शक्ति

(5) स्मरण शक्ति

(6) तार्किक शक्ति

(7) पर्यावरण शक्ति

5. प्रतिदर्श सिद्धान्त (Sampling theory):

प्रवर्क: थॉमसन

थॉमसन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में सभी मानसिक योग्यताओं का चौड़ा-2 sample पाया जाता है।

6. त्रि आयाम सिद्धान्त (Three dimensional theory)

प्रवर्क: गिल्फर्ड

त्रि आयाम

(1) संक्रिया / प्रक्रिया

(2) विषय वस्तु / अन्तर वस्तु

(3) उत्पाद / परिणाम

(1) समस्या समाधान के लिए व्यक्ति जिस मानसिक प्रक्रिया से गुजरता है उसे संक्रिया कहते हैं।

(2) समस्या समाधान के लिए जिस सामग्री की आवश्यकता होती है उसे विषय वस्तु कहते हैं।

(3) समस्या समाधान के लिए जिस रूप में सूचनाएं प्राप्त होती हैं उसे उत्पाद कहते हैं।

गिल्फर्ड ने 1961 में डिब्बे के आकार का एक मॉडल प्रस्तुत किया जिसे बुद्धि संरचना मॉडल कहते हैं। इस मॉडल के अन्तर्गत

बनाये गये। $5 \times 4 \times 6 = 120$ कोष

कुल कौष = 120
मूल रूप से कौषों की संख्या = 120

बाद में कौषों की संख्या 150 व उसके बाद 180 कर दी गई। लेकिन मूलरूप से कौषों की संख्या 120 थी।

पदानुक्रमिक सिद्धान्त / क्रमिक महत्व का सिद्धान्त

प्रवर्तक :- बर्ट र्ख वॉर्न
बर्ट र्ख वॉर्न ने मानसिक योग्यताओं को क्रमिक महत्व प्रदान किया। उन्होंने **स्पीयरमैन** की सामान्य मानसिक योग्यता को सर्वोच्च स्थान पर रखा फिर उसके विभाजन व उपविभाजन किए गए।

तथा संरचना **पिरामिड** के समान रखी गई।

8 कैटल व हॉर्न का बुद्धि सिद्धान्त :-

कैटल व हॉर्न ने स्पीयरमैन की सामान्य मानसिक योग्यता को दो भागों में बांटा है :-

तरल बुद्धि
(Fluid Intelligence)

जन्मजात

ठोस बुद्धि
(Crystallized Intelligence)

अर्जित

8 बहु बुद्धि सिद्धान्त (Multi Intelligence)

प्रवर्तक :- हार्वर्ड गार्डनर

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन **हार्वर्ड गार्डनर** ने 1983 में किया।

गार्डनर का मानना है कि बुद्धि का स्वरूप **स्काळी** न होकर **बहुकारणीय** होता है। उन्होंने मूलरूप से बुद्धि के **7 प्रकार** बताये हैं। बाद में 1998 में **8 वॉ** प्रकार तथा सन 2000 में **9 वॉ** प्रकार बताया। इस प्रकार वर्तमान में बुद्धि के **9 प्रकार** स्वीकार किए गए हैं।

बुद्धि

निष्पादन की संभावना

1. **भाषायी बुद्धि** कवि, वक्ता, लेखक, पत्रकार, व्याख्याता आदि।
2. **गणितीय-गणितीय बुद्धि** गणितज्ञ, वैज्ञानिक आदि।
3. **संगीतात्मक बुद्धि** (श्रेष्ठ) संगीतकार, वाद्यलिखन व अन्य वाद्य यंत्रों को बजाने वाले।
4. **स्थानिक बुद्धि** चित्रकार, मूर्तिकार, सर्वेक्षण अधिकारी आदि।
5. **व्यारीरिक गतिज बुद्धि** नृत्यक व नृत्यांगना, खिलाड़ी, मुम्केषा, तेराक, शाल्य-चिकित्सक, एम्बरफोर्स पायलट आदि।
6. **अन्तरव्यक्तिक बुद्धि** (Interpersonal Intelligence) राजनैता, चिकित्सक, क्रिष्य अधिकारी आदि।

7. अन्तरा वैयक्तिक बुद्धि (Interpersonal Intelligence)

योगी, संत व सही आत्मज्ञान से युक्त व्यक्ति।

8. प्रकृतिवादी बुद्धि: किसान, जीव वैज्ञानिक वतस्पति वैज्ञानिक आदि।

9. अस्तित्ववादी बुद्धि: दार्शनिक चिन्तक

बुद्धि मापन के साधन

1. वास्तविक आयु (Chronological age) C.A

2. मानसिक आयु (Mental age) M.A

3. बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient) I.Q

बुद्धि लब्धि का सूत्र 1916 में टरमन ने दिया।

$$\frac{M.A}{C.A} \times 100$$

बुद्धि परीक्षण का इतिहास:

बुद्धि परीक्षण के द्वारा मानसिक आयु ज्ञात की जाती है।
सबसे पहला बुद्धि परीक्षण 1905 में फ्रांस के निवासी
अल्फ्रेड बिने ने सादमन की मदद से तैयार किया
जिसका नाम बिने सादमन बुद्धि परीक्षण था।
उन्ही की संख्या 30 थी।

3. इस परीक्षण में पहला संशोधन 1908 व दूसरा संशोधन 1911 में किया गया।

अब प्रश्नों की संख्या थी - 59

4. पुनः 1916 में अमेरिका का स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में तरमन की अध्यक्षता में विनै साइमन बुद्धि परीक्षण में संशोधन किया गया तथा संशोधित परीक्षण कहलाया - स्टेनफोर्ड विनै परीक्षण या तरमन बुद्धि परीक्षण
प्रश्नों की संख्या - 90

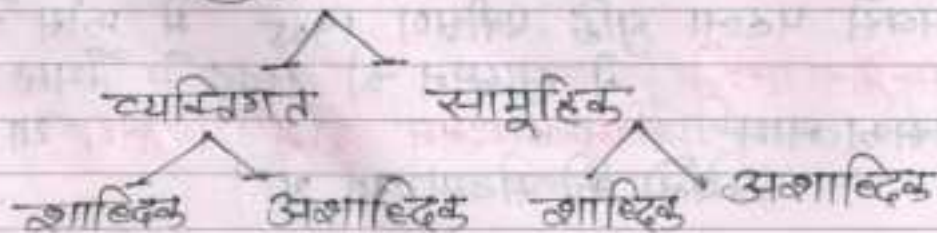
5. भारत में सबसे पहला बुद्धि परीक्षण 1922 में F.G. कॉलेज लाहौर के प्रिंसिपल डॉ. C.M. Rice के द्वारा बनाया गया।

C.M. राइस - 1922

6. डा. C.M. Rice ने विनै साइमन बुद्धि परीक्षण का भारतीय अनुकूलन किया तथा परीक्षण कहलाया - हिन्दुस्तानी विनै परफार्मेंस पाब्लिक स्कूल।
इस परीक्षण में अधिकतम व न्यूनतम उपकथन थे।

7. भारत में C.M. Rice के अलावा पं. लज्जादास झा आदि के द्वारा भी अनेक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया गया।

बुद्धि परीक्षण



- आशुद्धि परीक्षण वे होते हैं जिनमें शब्दों का प्रयोग होता है बोलकर या लिखकर

- अशुद्धि परीक्षण वे होते हैं जिनमें शब्दों का प्रयोग नहीं होता। जैसे:-

आकृति फलक परीक्षण। (निष्पादन परीक्षण)

वस्तु संयोजन परीक्षण।

चित्र-मूर्ति परीक्षण। (पेपर पेन्सिल परीक्षण)

चित्रांकन परीक्षण।

एलॉक बिल्डिंग परीक्षण। (निष्पादन परीक्षण)

मनुष्य कर्षण परीक्षण आदि। (पेपर पेन्सिल परीक्षण)

=> विभिन्न भाषी, विंक्लाग (गुंगो, बहरै, अंधै) व अनपढ़ व्यक्तियों के लिए **अशुद्धि परीक्षण** विशेष उपयोगी होते हैं।

=> सबसे पहला व्यक्तिगत आशुद्धि बुद्धि परीक्षण फ्रांस में 1905 में बनाया गया। जिसका नाम था

=> अशुद्धि परीक्षणों को **संस्कृति स्वतंत्र परीक्षण (Culture Free Test)** के नाम से भी जाना जाता है।

=> **औरियर्स** के द्वारा अमेरिका में प्रथम विश्व युद्ध के समय सैनिकों की छुटनी करने के लिए ज्ञान में दो प्रकार के सामुहिक परीक्षणों का निर्माण किया गया।

① **आर्मी अल्फा परीक्षण**:- सामुहिक आशुद्धि

② **आर्मी बीटा परीक्षण**:- सामुहिक अशुद्धि

- ⇒ अशाब्दिक परीक्षण अधिकांशतः व्यक्तिगत होते हैं व कुछ व्यक्तिगत सामूहिक
- ⇒ शाब्दिक परीक्षण अधिकांशतः सामूहिक होते हैं व कुछ व्यक्तिगत
- ⇒ वर्तमान समय में प्रचलित परीक्षण हैं- सामूहिक शाब्दिक
- ⇒ सर्वश्रेष्ठ बुद्धि परीक्षण है- व्यक्तिगत शाब्दिक
- ⇒ हममें नै अशाब्दिक परीक्षणों की आलोचना करते हुए शाब्दिक परीक्षणों को उचित बताया है।
- ⇒ लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिक अशाब्दिक परीक्षणों को उचित बताते हैं।
- ⇒ निष्कर्ष रूप में शाब्दिक व अशाब्दिक परीक्षणों को एक दूसरे का विरोधी न समझकर पुरक समझना चाहिए।

बेसल वर्ष :-

जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को बालक द्वारा हल कर दिया जाता है उसे बेसल वर्ष कहते हैं। और यही उसकी मानसिक आयु मानी जाती है।

दर्मिगल वर्ष :-

जिस आयु स्तर के प्रश्नों को बालक

हल मही कर पाता है उसे लर्मिनल वर्ध कहते हैं।

हरमन ने बुद्धिलब्धि के वर्गीकरण की सारणी 1916 में तैयार की।

बुद्धिलब्धि

बुद्धि वर्ग

1	140 से अधिक	01%	प्रतिभाशाली (Genius)
2	120-139	5%	उत्कृष्ट बुद्धि (Superior)
3	110-119	14%	तीव्र बुद्धि (Above Average)
4	90-109	60%	सामान्य (Average)
5	80-89	14%	मन्द (मेंगोलिफ़) व पिछड़े (Dull or Backward)
6	70-79	5%	निर्बल बुद्धि (Feeble minded)
7	70 से कम	01%	निर्बल बुद्धि मूर्ख (Idiot)

मूर्खों की श्रेणी

50-69	=	मूर्ख (Moron) - Ist
25-49	=	मूढ़ (Imbecile)
25 से कम	=	जड़ (Idiot)

यदि बालक की वास्तविक आयु 10 गणित की
8 other = 10

$$\text{औसत} = \frac{8+10}{2} = \frac{18}{2} = 9$$

$$\frac{9}{10} \times 100 = \underline{\underline{90}}$$

Most ~~संवेग~~ ^{है} ~~संवेगात्मक बुद्धि~~ ^{है} ~~[Emotional Intelligence]~~

संवेग (Emotion)

Emotion शब्द की उत्पत्ति Latin भाषा के Emovere

से हुई है जिसका अर्थ होता है उत्तेजित करना।

1. संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा को प्रदर्शित करते हैं।
2. संवेग दो प्रकार के होते हैं।
3. संवेगों का प्रभाव व्यक्ति की क्रियाशिलता पर पड़ता है।
4. संवेग जन्मजात होते हैं।
5. सभी संवेगों का विकास एक साथ न होकर धीरे-धीरे होता है।

वाटसन के अनुसार नवजात शिशु में तीन संवेग होते हैं।

ब्रिजिश के अनुसार जन्म के समय केवल एक संवेग होता है। तथा 2 वर्ष की आयु तक बालक में सभी संवेगों का विकास हो जाता है। संवेगों की मात्रा सभी व्यक्तियों में समान नहीं होती है। संवेग जन्मत ही एकदम से ही जाते हैं लेकिन बाल्य धीरे-2 होते हैं।

जैसे-2 संवेग तीव्र होते हैं बुद्धि में कमी आने लगती है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो संवेगात्मक बुद्धि शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1990 में दो अमेरिकी प्रोफेसर डा. जॉन मेयर व पीटर सेलैवे के द्वारा किया गया। लेकिन वर्तमान समय में जिस रूप से संवेगात्मक बुद्धि की सर्वत्र चर्चा की जा रही है इसका प्रमुख श्रेय एक अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डेनियल गेलमैन को जाता है। इन्होंने 1995 में प्रकाशित अपनी पुस्तक संवेगात्मक बुद्धि बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों के माध्यम से इसे चर्चा का विषय बनाया।

डेनियल गेलमैन की दूसरी पुस्तक का नाम है- संवेगात्मक बुद्धि के साथ कार्य

संवेगात्मक बुद्धि से गल्पार्थ अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को जानने समझने व उनका उचित प्रबंधन करने से है।

किसी भी चितनी संवेगात्मक बुद्धि है इसकी जाँच करने के लिए जिस इकाई विशेष का प्रयोग किया जाता है।

इसलिए उसे ह.द्व (स्वैच्छात्मक बुद्धि) के नाम से जाना जाता है।

स्वैच्छात्मक बुद्धि के मॉडल (प्रमाण)

1. Ability Model :-

प्रवर्तक : डा. ज्ञानमैथरव पीटर स्त्रैल

इस मॉडल से तात्पर्य दूसरों की भावनाओं को जानने-समझने व उनका उचित प्रबंधन करने से है।

2. Trait Model :-

प्रवर्तक : के.वी. पैट्रिक्स

इस मॉडल से तात्पर्य है स्वयं की भावनाओं को जानना, समझना, नियंत्रित करना व उचित प्रबंधन करना।

3. Mixed Model :-

प्रवर्तक : डेनिथल गोल्मैन

इस मॉडल से तात्पर्य है अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को जानना समझना नियंत्रित करना व सामाजिक कौशल का विकास करना।

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता

कौन व्यक्ति जीवन में कितना सफल हो सकता है इसकी अविवक्षणी E. Q द्वारा की जा सकती है।

जीवन को सुखमय व शांतिप्रिय बनाने में इसका योगदान होता है।

विद्यार्थी जीवन में मिलने वाली सफलता के पीछे भी इसका योगदान होता है।

काम-काज की दुनिया में निपुणता प्राप्त करने में भी यह सहायक है।

समुदाय के अन्तर्गत अपना स्थान बनाये रखने में भी E. Q सहायक है।

सम्बन्धों में छानिछटा लाने में भी इसका योगदान होता है।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में वांछित सफलता प्राप्त करने में भी इसका योगदान होता है।

अधिगम (Learning)

अधिगम एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिससे द्वारा व्यक्ति परिपक्वता की ओर बढ़ते हुए तथा अपने अनुभवों से लाभ उठाते हुए अपने व्यवहार में परिवर्तन या परिमार्जन करता है।

अधिगम की विशेषताएँ :-

1. सीखना सार्वभौमिक है।
2. सीखना वातावरण की उपज है।
3. सीखना जीवन पुरन्त चलता रहता है।
4. सीखना व्यवहार में परिवर्तन करना है।
5. सीखना बुद्धि में विकास करना है।
6. सीखना अनुभवों का संगठन है।
7. सीखना एक शौच करना है।
8. अधिगम सक्रिय रहकर होता है।
9. अधिगम में समय लगता है।
10. अधिगम से अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन होता है।

Q बालक नवीन व्यवहार को शौचता है।

- | | |
|-----------|----------------|
| (1) देखकर | (3) सीखकर |
| (2) सुनकर | (4) अनुभव करके |

अधिगम के सौपान :-

- | | |
|-----------------------|--------------------|
| ① अभिप्रेरणा | ⑤ अनुभवों का संगठन |
| ② विभिन्न अनुक्रियाएँ | ⑥ लक्ष्य |
| ③ बाधाएँ | |
| ④ पुनर्वसन | |

अधिगम के सिद्धान्त

उदीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त (Stimulus Response ^{theory})

प्रवर्तक - थार्नडाइक (व्यवहारवादी)

निवासी - अमेरिका

सिद्धान्त दिया - 1913

प्रयोग - बिल्ली पर

उदीपक
अनुक्रिया

प्रयोग :- भुखी बिल्ली $\rightarrow$ पिंजरे में बंद $\rightarrow$ बाहर मौस का
टुकड़ा (उदीपक) $\rightarrow$ अनुक्रिया

भुखी बिल्ली पर किए गये प्रयोग से इस सिद्धान्त का
दूसरा नाम निकलना है। प्रयास व त्रुटि या प्रयत्न व भूल
का सिद्धान्त (Trial & Error theory)

थार्नडाइक के अनुसार उदीपक को देखकर अनुक्रिया होती है अर्थात् दोनों
में सम्बन्ध अथवा बन्धन होता है इस आधार पर इस
सिद्धान्त का एक और नाम निकलता है सम्बन्धवाद/संयोजन
वाद/बन्धका सिद्धान्त (Bond theory)

थार्नडाइक द्वारा बताये गए अधिगम के नियम
मुख्य नियम (3)

1. तत्परता का नियम
2. अभ्यास का नियम
3. परिणाम व प्रभाव का नियम / सीर्गोष व असीर्गोष का नियम

अभ्यास के नियम :- (उपनियम)

1. उपयोग का नियम
2. अनुपयोग का नियम

=> गौण नियम (5)

1. बह प्रतिक्रिया का नियम
2. मानसिक विन्यास का नियम
3. आशिक क्रिया का नियम
4. आत्मिकरण का नियम
5. साहचर्य परिवर्तन का नियम

=> औसिक महत्व

1. अनुभव से लाभ उठाना।
2. निरन्तर प्रयास पर बल।
3. अभ्यास की क्रिया पर आधारित।
4. करके सीखना।
5. असफलता में सफलता।
6. निराशा में आशा।
7. आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता।
8. छोटे बालकों के सीखने के लिए विशेष उपयोगी।
9. मन्द गति से सीखने वालों के लिए विशेष उपयोगी।

2. अनुश्रिया अनुफलित सिद्धांत (Condition Response Theory)

आस्रीय अनुबंध सिद्धान्त / प्राचीन अनुबन्धन सिद्धान्त /
अनुबन्धन का सिद्धान्त / सम्बन्ध प्रक्रिया या प्रतिक्रिया /
सम्बन्ध प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त

प्रवर्तक - पॉवलव (व्यवहारवादी)

निवासी - रूस

सिद्धान्त दिया - 1904

प्रयोग किया - कुत्ते पर

प्रयोग ^{CR} (अस्वाभाविक उद्दीपक) ^{U.CS / U.CR} (स्वाभाविक उद्दीपक)
कुत्ता → घण्टी → भोजन

भोजन को देखकर लार स्वाभाविक अनुक्रिया (U.CR)
घण्टी की आवाज पर गिरने वाली लार अस्वाभाविक अनुक्रिया
(CR)
जो क्रिया (लार का गिरना) पहले भोजन को देखकर हो
रही थी वही क्रिया घण्टी की आवाज को सुनकर होने
लगी इसी को हम अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त कहते हैं।

पुनरावृत्ति के आधार पर जो सम्बन्ध स्थापित होगा उसे
अनुबन्धन कहते हैं।

पॉवलव को अनुबन्धन का पिता / जनक माना जाता है।

रूसी शरीर शास्त्री पॉवलव को इसी सिद्धान्त के परिणाम
स्वरूप 1904 में नोबल पुरस्कार मिला।

मुख्य शब्दावली

1. विलोप / विलीनीकरण :-

अनुबन्धन स्थापित होने के बाद यदि बार-बार 2 मास अनुबन्धित उद्दीपक (घण्टी) ही प्रस्तुत किए जाने पर अनुबन्धित क्रिया का बंद हो जाना विलोप कहलाता है।

2. उद्दीपक सामान्यीकरण :-

बालक मिलरी-जुलरी परिस्थितियों के प्रति वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वह पूर्व अनुभव में कर चुका है। जैसे

- (i) एक बालक को लाल गुलाब का कांटा चुभने पर चीख पड़नी लगे अब वह किसी भी लाल वस्तु से डरने लगा इसी को उद्दीपक सामान्यीकरण कहते हैं।
- (ii) पाँवबल ने घण्टी की आवाज के स्थान पर सिली बजाई जो कि घण्टी की आवाज से मिलरी जुलरी थी। तो इस पर कुत्ते ने वही क्रिया की जो वह घण्टी की आवाज पर करता था।
- (iii) वॉटसन ने अलबर्ट नामक बालक पर प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला कि बालक खरगोश से डरे डरने ही लगा साथ ही साथ शैशेदार-चीजों से भी डरने लगा।

3. उद्दीपक विभेदीकरण (Stimulus Differentiation)

कुत्ते को घण्टी की आवाज पर पुनर्बलित किया गया। लेकिन सिली की आवाज पर नहीं तो कुत्ता धीरे-2 दोनों उद्दीपकों के बीच विभेद करना सीख गया।

और अब वह घण्टी की आवाज पर ही क्रिया करता था।
सीरी की आवाज पर नहीं।

सांख्यिक अनुबन्धन सिद्धान्त / क्रिया प्रत्युत अनुबन्धन /
कार्यात्मक अनुबन्धन सिद्धान्त (Operant Conditioning
theory): इंग्लिश चरीफ
प्रवक्ता:- स्किनर (अमेरिका) 1938

स्किनर ने चूहे व कबूतर पर प्रयोग किए।

उपयोग 1938 1943 ✓

चूहा → बाक्स में बद → उल्लूक (क्रिया योजना पुनर्बलन)

स्किनर क्रियाओं पर विशेष जोर देते हैं इसलिए उन्होंने
थर्मोडायक के डर सिद्धान्त को R.S में बदल दिया।
इसलिए कहते हैं अनुक्रिया बाद में प्रदीपक
वह डर सिद्धान्त के बाद है।

स्किनर का मानना है कि क्रिया करते रहना चाहिए तथा क्रिया
करने के तुरन्त बाद बालक को पुनर्बलन देना चाहिए क्योंकि
पुनर्बलन मिलने से क्रिया करने की गति में और अधिक तीव्रता
आ जाती है।

औसतिक महत्व:-

वांछित। उचित अनुक्रियाओं के पुनर्बलीकरण से बालक को
प्रोत्साहन मिलता है और वे उचित व्यवहार करने लगते हैं।
क्रिया के अनुसार सकारात्मक व नकारात्मक पुनर्बलन तुरन्त
देना चाहिए क्योंकि देर करने से इसका प्रभाव कम हो
जाता है।

अनुक्रिया अनुदेशन इसी सिद्धान्त पर आधारित है।

4. गेस्टाल्ट सिद्धान्त या सूक्ष्म या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त (Gestalt or Insight theory):-

गेस्टाल्ट जर्मन भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है पूर्णाकार या समग्ररूप।

1920 में जर्मनी में गेस्टाल्ट सम्प्रदाय का उदय हुआ इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित व्यक्ति थे मैक्स वर्त्मायर, कोह्लर, कौफका व कुर्त्लेविन। ये सभी गेस्टाल्टवादी कहलाये तथा उन्होंने जो सिद्धान्त दिया वह गेस्टाल्ट सिद्धान्त कहलाया।

⇒ कोह्लर ने सुल्तान नामक चिमपाजी पर प्रयोग किया।

प्रयोग

चिमपाजी (सुल्तान) → कमरे में बंद → छत पर लटकते कैले → सूक्ष्म-बुद्धि का प्रयोग → बाक्स पर चढ़कर कैले प्राप्त किया।

⇒ इस प्रयोग से इस सिद्धान्त का दूसरा नाम सूक्ष्म व अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त निकलता है।

⇒ इस प्रयोग से इस सिद्धान्त के कुछ नियम निकलकर आते हैं।

1. सख्यमात्मक का नियम (Law of Constructivism)
2. समीपता का नियम (Law of Proximity)
3. समानता का नियम (Law of Similarity)
4. सरलता का नियम (Law of Simplicity)

प्रवर्तक - मैक्स वर्दीमर
 प्रयोगकर्ता - कोहलर
 सहयोगकर्ता - कोपन्का, कोपका व कुर्त्लेविन

1. छोटे बालक जिनकी बुद्धि का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है वे प्रघास व छुरि द्वारा सीखते हैं लेकिन किशोर जिनकी बुद्धि का पूर्ण विकास हो जाता है वे सुझ एवं अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखते हैं।
2. पूर्ण से अंश की ओर जिसका सुझ इसी सिद्धान्त की देन है।
3. अध्यापक को चाहिए कि वह बालक की समस्या का पुरा ज्ञान करे यदि सम्भव। समस्या के प्रति ज्ञान अपूर्ण होगा तो अन्तर दृष्टि विकसित नहीं हो सकेगी।
4. इस सिद्धान्त के द्वारा सीखने से विचार शक्ति, कल्पना शक्ति निरीक्षण शक्ति आदि मानसिक योग्यताओं का विकास होता है।
5. विज्ञान शक्ति व्याकरण जैसे कठिन विषयों को सीखने और सीखाने के लिए यह सिद्धान्त उपयोगी है।
6. अनुसंधान व समस्या समाधान के क्षेत्र में सिद्धान्त की विशेष उपयोगिता है।
7. यह सिद्धान्त यांत्रिक तरीके से सीखने का खण्डन करता है। गणितार्थिक तरीके से सीखने पर बल देता है।

5. सामाजिक अधिगम सिद्धान्त (Social Learning theory)

प्रवर्तक :- अलबर्ट बान्डूरा

समाज द्वारा मान्य व्यवहार को आनाथे तथा अमान्य व्यवहार को त्याग दे त्यागने के कारण ही यह सामाजिक अधिगम सिद्धान्त कहलाया।

शुद्धि तथा जीवित जिकर पर किए गये प्रयोगों से बालक ने यह निष्कर्ष निकाला की बालक अनुकरण के माध्यम से सीखता है।

अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया :-

1. अवधान / ध्यान केन्द्रित ✓
2. धारण ✓
3. पुनः प्रस्तुतीकरण ✓
4. पुनर्बलन ✓

Important

Note: दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखना सामाजिक अधिगम कहलाता है।

Note: जिसको देखकर बालक व्यवहार करना सीखता है उसे प्रतिमान (मॉडल) कहते हैं।

नैतिक महत्व :

- Imp.**
1. बालक के व्यक्तित्व निर्माण में यह सिद्धान्त विशेष उपयोगी है।
 2. छोटे बालक सही व गलत व्यवहार में अन्तर करने में अपने को असमर्थ पाते हैं यही कारण है कि वे गलत व्यवहार को अनुकरण के माध्यम से सीख लेते हैं। अतः बालक के सामने सही व्यवहार वाले प्रतिमान को आकर्षित तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए।
 3. कक्षा-कक्ष में बालक के सामने सदैव आदर्श व्यवहार वाले प्रतिमान ही प्रस्तुत करना चाहिए।

संरचनात्मकता या निर्मितिवाद (Constructivist)

प्रवर्तक :- जेरीम ब्रुनर ~~संरचनात्मकता~~ ^{संरचनात्मकता} ~~जाने~~ ^{जाने} ~~किसी~~ ^{किसी} ~~विज्ञान~~ ^{विज्ञान} ~~वस्तु~~ ^{वस्तु} ~~को~~ ^{को} ~~संरचना~~ ^{संरचना} ~~(ब्रुनर)~~ ^(ब्रुनर)

संरचनात्मक शब्द से तात्पर्य ज्ञान की संरचना बनाना।

संरचनात्मक शब्द की उत्पत्ति मनोविज्ञान के ~~संरचनात्मक~~ ^{संरचनात्मक} क्षेत्र से हुई है।

छात्र का मानना है कि बालकों को उस प्रकार से पढ़ाया जाये ताकि उनकी मानसिक योग्यताओं का विकास हो सके तथा वे स्वयं ज्ञान की संरचना कर सकें।

जेरीम ब्रुनर का मानना है कि जो भी विषयवस्तु पढ़ाई जाये उसकी मूलप्रवृत्ति व सिद्धान्तों से बालकों को अवगत कराया जाए क्योंकि ऐसा करने से :-

सीखना सरल हो जाता है।

बालक कठिने के साथ सीखता है।

ऐसा ज्ञान स्थायी होता है।

ऐसा ज्ञान अधिगम स्थानान्तरण में सहायक होता है।

निर्मितिवाद

निर्मितिवाद एक छात्र केन्द्रित क्रिया है।

इसमें बालक स्वयं ज्ञान का सर्जन करते हैं।

नवीन ज्ञान का सर्जन पूर्व ज्ञान के आधार पर किया जाता है।

निर्मितिवाद पूर्वज्ञान के अनुभव पर खल देता है।

यह छात्रों की सक्रियता पर खल देता है।

यह अर्धपूर्ण अधिगम पर खल देता है।

7. यह बालक को मे जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व की भावना प्रामाण्य करता है।
8. यह बालक को मे आपसी साझेदारी व सहयोग की भावना प्रामाण्य करता है।
9. समूह के छात्र आपस में चर्चा करते हैं सक्रिय रहते हैं तथा पूर्वज्ञान व नवीन ज्ञान की अन्तर्क्रिया करते हुए समस्या का समाधान या निष्कर्ष निकालते हैं।

जैरीम पुनर द्वारा बताई गई अधिगम की अवस्था:-

① विधि निर्माण आधारित अधिगम की अवस्था
(Enactive) - 0-2 वर्ष

इस अवस्था में बालक अपनी संवेदनाओं व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से अधिगम करता है।

② प्रतिमा आधारित अधिगम की अवस्था:-
(Iconic) - 3-12 वर्ष

इस अवस्था में बालक मूर्त प्रत्यक्षीकरण द्वारा अधिगम करता है।

③ चिह्न आधारित अधिगम की अवस्था:-
(Symbolic) - 12 के बाद

इस अवस्था में चिह्न, चिन्हों प्रतीकों व अक्षर चिह्नन द्वारा अधिगम करता है।

7. आसुबेल का अधिगम सिद्धान्त:

आसुबेल व जेरोम बुनर दोनों के सिद्धान्त आधुनिक सज्जानात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। दोनों के सिद्धान्त अर्धपूर्ण अधिगम पर बल देते हैं। दोनों के सिद्धान्त लगभग समान हैं केवल एक विषय है

- जेरोम बुनर का मानना है कि बालक अर्धपूर्ण अधिगम आगमनात्मक तरीके (उदा. से नियम) से करता है जबकि आसुबेल का मानना है कि बालक अर्धपूर्ण अधिगम निगमनात्मक तरीके (निग्रम से उदाहरण) से करता है।

8. पुनर्बलन | प्रबलन | सखीकरण का सिद्धान्त / क्रमबद्ध व्यवहार सिद्धान्त / न्यायक न्यूनता सिद्धान्त / परिष्कृत सिद्धान्त / पथार्थ सिद्धान्त (Reinforcement theory):

इस सिद्धान्त का परिपाद स्कार्ट हल ने 1935 में अपनी पुस्तक Principle of Behaviour के अन्तर्गत किया।

- आवश्यकता की पूर्ति करना इस सिद्धान्त का मुख्य तत्व है।
- धार्मठाडक के अनुसार उद्दीपक को देखकर अनुक्रिया होती है। जबकि स्कार्ट हल के अनुसार अनुक्रिया उद्दीपक के कारण ना होकर आवश्यकता के लिए होती है।
- आवश्यकता की पूर्ति के लिए उठाया गया हर एक सफल कदम व्यक्ति को पुनर्बलन देता है तथा व्यक्ति क्रमबद्ध तरीके से व्यवहार करता हुआ आगे बढ़ता है।

तथा आवश्यकता पूर्ति करने वालक को शान्त करता है।

ब्लार्क हल के अनुसार:-

सीखना आवश्यकता की पूर्ति की प्रक्रिया के द्वारा होता है।

स्किनर के अनुसार:-

अब तक सीखने के बिना भी सिद्धान्त प्रस्तुत किए गये हैं। उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है।

9. **कुर्त्सेविन का क्षेत्रसिद्धान्त या तत्त्व रूप सिद्धान्त (field theory):**

इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम व्यक्ति और वातावरण का प्रतिफल है। इसे निम्न संकेत द्वारा दर्शाया गया है।

$$L = f(P - E)$$

L = Learning

f = field

P = Personal

E = Environment

1. वॉलमैन का चिन्ह सिद्धान्त (Sign theory)

इस सिद्धान्त के अनुसार बालक चिन्हों के माध्यम से अधिगम करता है। वॉलमैन ने वातावरणीय उद्दीपकों को चिन्ह नाम दिया है।

2. गुधरी का प्रतिस्थापन सिद्धान्त (Substitution theory)

एरिक गुधरी

अबेल गुधरी

इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम जन्मजात व अति अनुक्रियाओं को दूसरी अथवा प्रतिस्थापित क्षेत्रों की ओर विस्थापित करने की क्रिया है।

3. कार्ल रोजर्स का अनुभवजन्य अधिगम सिद्धान्त (Experienced learning theory):

अनुभवजन्य अधिगम सिद्धान्त

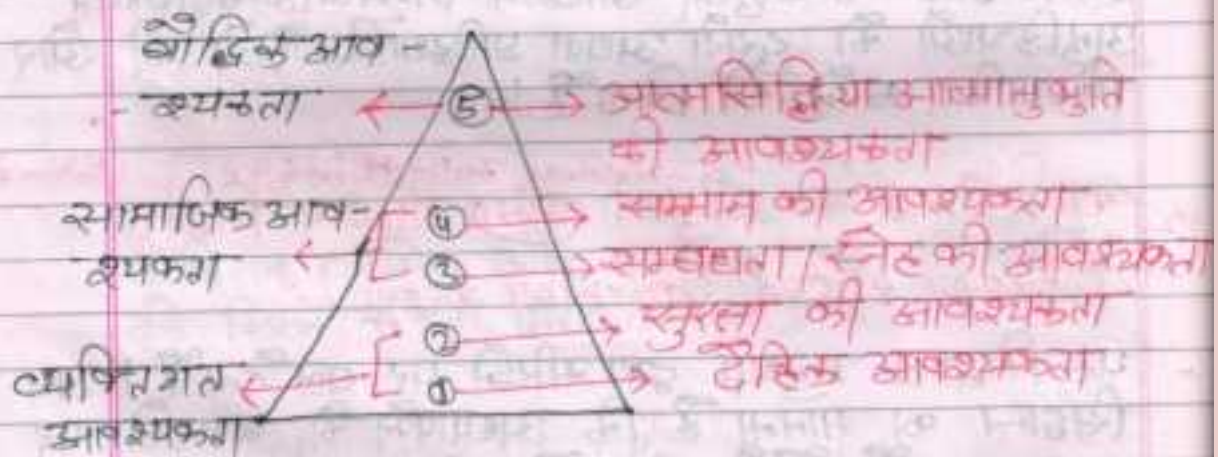
(Experienced learning theory)

यह सिद्धान्त अनुभव द्वारा सीखने पर बल देता है। इस सिद्धान्त का मानना है कि अध्यापकों को बालकों पर क्या पढ़ना है, कैसे पढ़ना है, कितना पढ़ना है आदि बातों को धोपना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें स्वतंत्रपूर्वक अधिगम करने देना चाहिए।

शिक्षकों को व्याख्यान विधि जैसी परम्परागत विधियों के स्थान पर शैक्षिक भ्रमण, सेमिनार, कार्यशाला आदि नीतियों का प्रयोग करना चाहिए ताकि बालक स्वयं अनुभव करके सीख सकें।

13. मैसलो का मानवतावादी अधिगम सिद्धान्त (Humanistic Learning theory) या आवश्यकता प्रक्रमिक सिद्धान्त (Need Hierarchical theory)

मैसलो के अनुसार व्यक्ति की पाँच आवश्यकताएँ अधिगम करने के लिए प्रेरित करती हैं।



अधिगम के सिद्धान्त :- अधिगमों के सिद्धान्तों के मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है :-

1. **सांख्यिक / परिधीय / व्यवहारवादी सिद्धान्त :-**
 - (1) धार्मिकता :- उदीपक अनुक्रिया सिद्धान्त
 - (2) पापक्षय :- अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त
 - (3) स्किनर :- सक्रिय अनुबन्ध सिद्धान्त
 - (4) ब्लाउ ब्ल :- पुनर्बलन का सिद्धान्त
 - (5) गुथरी :- प्रतिस्थापन सिद्धान्त

8. કેન્દ્રીય / સૈત્રીય / સંજ્ઞાનાત્મક સિદ્ધાન્ત

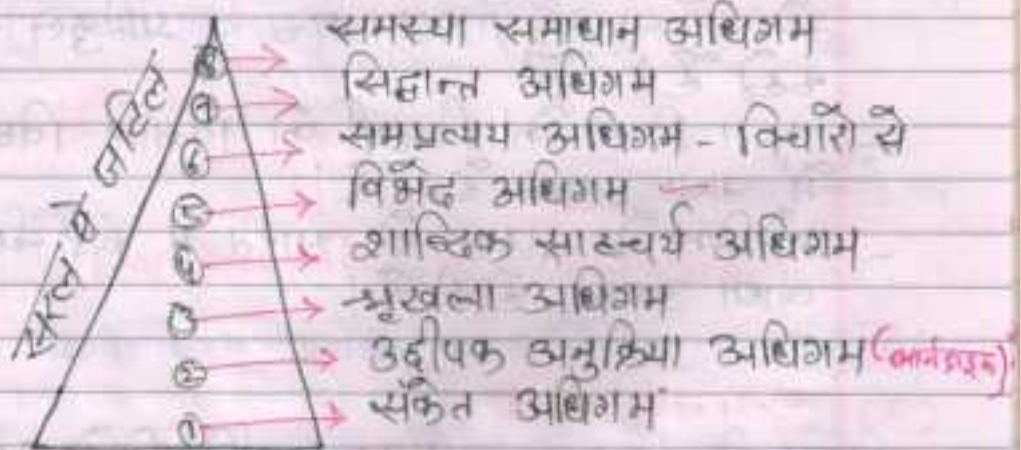
1. વેમ્સ વર્દીમર :- ગૅસ્ટાલ્ટ સિદ્ધાન્ત
2. અલ્બર્ટ બાઉરુસ :- સામાજિક અધિગમ સિદ્ધાન્ત
3. કુર્ટ લેવિન :- સૈત્ર સિદ્ધાન્ત
4. ટાલમેન :- ચિન્હ સિદ્ધાન્ત

2. અન્ય :

- (1) બૅરોમ બ્રુનર :- સંસ્થનાત્મક અધિગમ સિદ્ધાન્ત
(આધુનિક સંજ્ઞાનાત્મક સૈત્ર)
- (2) આસુબેલ :- અધિગમ સિદ્ધાન્ત
- (3) કાર્લ લૅવિન :- અધિગમજન્ય સિદ્ધાન્ત (માનવગવાદી સૈત્ર)
- (4) મૅસલો :- આવશ્યકતા પ્રદાનુક્રમિક સિદ્ધાન્ત

અધિગમ કે પ્રકાર

રોબર્ટ ગેને ને અધિગમ કે 8 પ્રકાર વર્ગીયે હૈ તથા
અન્હે સરલ સે જટિલ ક્રમ મૈ પ્રસ્તુત કિયા હૈ।



अधिगम स्थानान्तरण :-

जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दूसरी स्थिति में अधिगम स्थानान्तरण कहते हैं।

(1) सकारात्मक स्थानान्तरण :-

जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दूसरी स्थिति में सहायक होता है तो इसे सकारात्मक / धनात्मक व अनुकूल स्थानान्तरण कहते हैं। जैसे :-

- साइकिल चलाने वाला स्कुटर चलाना आसानी से सीख जाता है।
- गणित विषय का ज्ञान भौतिकी के ज्ञान में सहायक होता है।

(2) नकारात्मक स्थानान्तरण :-

जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान दूसरी स्थिति में बाधक होता है तो इसे नकारात्मक / प्रक्षालात्मक व प्रतिकूल स्थानान्तरण कहते हैं। जैसे :-

- कला विषय के विद्यार्थी को विज्ञान विषय पढ़ने में बाधा उत्पन्न होती है।
- अमेरिका के ड्राइवर को भारत में कार चलाने में बाधा उत्पन्न होती है।

(3) शून्य स्थानान्तरण :-

जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दूसरी स्थिति में न तो सहायक और न बाधक होता है तो इसे शून्य स्थानान्तरण कहते हैं।

जैसे:-

प्रार्थना याद कर लेने पर भी देशभक्ति गीत याद करने में उतना ही समय लगता है।

एक क्रिकेट मैच में बैटिंग का ज्ञान बॉलिंग में सहायक नहीं होता।

कबीर के दोहे याद कर लेने पर भी रहीम के दोहे याद करने में उतना ही समय लगता है।

* अभिप्रेरणा (Motivation) *

अभिप्रेरणा

↓
Latin =

Motum

चलने/गति करने से बना है

↓

Move, Motion (गति करना)

Motum

अभिप्रेरणा एक ऐसा प्रेरक बल है जो व्यक्ति को लाभ प्राप्ति की ओर या निश्चित व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है अथवा गति प्रदान करता है।

⇒ क्रैग एवं क्रैगफील्ड के अनुसार:-

उत्तर देती है।

अभिप्रेरणा हमारे मनो का

(क्रैगफिल्ड और फिल्लिंग के अनुसार) (मन को प्रेरित करना)

⇒ स्प्रिंजर:- अभिप्रेरणा आशेषण का सर्वोत्कृष्ट राजमार्ग है।

⇒ स्पष्ट चिन्तन:- किसी व्यक्ति में कार्य करने की प्रवृत्ति जागृत करना ही अभिप्रेरणा है।

अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्तम स्वरूप।
 अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्कृष्ट राजमार्ग।
 अभिप्रेरणा अधिगम का हृदय।
 अभिप्रेरणा अधिगम का स्वर्णपथ।
 अभिप्रेरणा अधिगम का मुख्य न्यायक

अधिगम सर्वोत्तम होगा जब अभिप्रेरणा होगी।

अभिप्रेरणा के स्त्रोत

1. आवश्यकता (Need) :- ^{पुष्पात कार्य है अभिप्रेरणा का}
 प्रत्येक व्यक्ति की कोई ना कोई आवश्यकता होती है। जो उसे क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

2. चालक / प्रवोदन / अन्तर्निधि (Drive) ^{प्रवोदन}
 आवश्यकता से जुड़ा हुआ एक चालक होता है जो व्यक्ति की आवश्यकता से जुड़ा हुआ चालक है।
 भूख, पानी की आवश्यकता है जुड़ा हुआ चालक है।
 (ध्यान) जो कि व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। (भूख, प्यास, नींद आदि)

3. उद्दीपक / प्रोत्साहन (Incentive) ^{उद्दीपक सामान}
 देने पर व्यक्ति क्रिया करने के लिए प्रेरित होता है। उद्दीपक के मिलने पर चालक शान्त हो जाता है व तनाव शान्त हो जाता है।

अभिप्रेरक:

उपरोक्त तीनों का योग ही अभिप्रेरक है।

अभिप्रेरक:

$\text{आवश्यकता} + \text{अनुरोध} + \text{प्रेरक} = \text{अभिप्रेरक}$
 $\text{आवश्यकता} + \text{चालक} + \text{उद्दीपक}$

Motive :- $M + D + I$

अभिप्रेरकों का वर्गीकरण :-

1. **मैसलो के अनुसार :-**

- (1) जन्मजात
- (2) अधिनि

2. **थॉमसन के अनुसार :-**

- (1) स्वभाविक
- (2) कृत्रिम

3. **गैरेट के अनुसार :-**

- (1) भौतिक / दैहिक
- (2) मनोवैज्ञानिक
- (3) सामाजिक

अभिप्रेरणा के सिद्धान्त :-

(1) **मुल प्रवृत्त्यात्मक सिद्धान्त :-** **विलियम मेन्डगल**

इस सिद्धान्त के अनुसार मुल प्रवृत्तियाँ व्यापक को क्रिया करने के लिए प्रेरित करती हैं।

(2) **मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त :-** **स्विमड फ्रायड**

इस सिद्धान्त के अनुसार अचेतन मन में दमित इच्छाएँ व्यापक को क्रिया करने के लिए प्रेरित करती हैं।

3. उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धान्त: - मैकलेन्ड
इस सिद्धान्त का प्रतिपादन हार्वर्ड विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक डेविड सी मैकलेन्ड द्वारा किया गया उनके सहयोगी थे रुथ किन्सन व होमेन्गा।

फर्नीलड के अनुसार: - उपलब्धि अभिप्रेरणा से तात्पर्य मैकले के विशेष स्तर को प्राप्त करने की इच्छा से है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा से प्रेरित होकर व्यक्ति वहाँ तक पहुँचने की चाह रखता है जहाँ तक उसी के द्वारा पहुँचा जा सकता है।

4. आवश्यकता / प्रदानात्मक सिद्धान्त: - मैकले

इस सिद्धान्त के अनुसार पूँछ अवस्था व्यक्तित्व को क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

5. सक्रियता का सिद्धान्त: - इस सिद्धान्त के अन्तर्गत सोलेयबरी, मैकले, लिडवै के नाम लोकप्रिय हैं।

यह सिद्धान्त व्यवहार की दृष्टि पर बल देता है तथा दृष्टि के लिए भावप्रेरणा की सक्रियता पर बल देता है।

6. संतुलन - र्घ्य सिद्धान्त :-

इस सिद्धान्त में चैपलिन, कोफर व रूपल के नाम लोकप्रिय हैं यह सिद्धान्त असंतुलन की स्थिति में भी संतुलन बनाये रखने पर बल देता है।

1. प्रशंसा एवं मित्रों द्वारा।
2. आवश्यकताओं का ज्ञान कराकर।
3. आभासा का स्तर ज्ञानकर।
4. सफलता का आभास कराकर।
5. असफलता का भय दिखाकर।
6. परिस्पष्टता की भावना जागृत करें।
7. प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा।
8. महापुरुषों के उदाहरण द्वारा।
9. उचित शिक्षण विधियों के प्रयोग द्वारा।
10. मूल्य दृश्य सामग्री के प्रयोग द्वारा।
11. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन द्वारा।
12. विहात्म्य एवं कष्ट के उचित वारंकरण द्वारा।

1. केंची जागृत करने में सहायक।
2. ध्यान केन्द्रित करने में सहायक।
3. व्यवहार को नियंत्रित करने में सहायक।
4. अनुशासन स्थापित करने में सहायक।
5. मानसिक क्रियाओं के विकास में सहायक।
6. अधिगम तत्परता जागृत करने में सहायक।
7. लक्ष्य प्राप्ति में सहायक।
8. चरित्र निर्माण में सहायक।

व्यक्तिगत विभिन्नता

Individual Difference

लायलर =>

शरीर के रूप, रंग, आकार, सीखने की गति, स्मृति, अहं, ठपल बिहा, रुची, अभिरुची आदि पक्षों में पायी जाने वाली भिन्नता को व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।

विशिष्ट बालक =>

ऐसे बालक जो औसत दर्जे के बालकों से भिन्न होते हैं। विशिष्ट बालक कहलाते हैं। ऐसे बालक सामान्य दर्जे के बालकों से या तो बहुत अधिक निपुण होते हैं या फिर पीछे रह जाते हैं।

1. प्रतिभाशाली बालक =>

को व को के अनुसार प्रतिभाशाली बालक दो प्रकार के होते हैं।

1. ऐसे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है। वे बालक भी प्रतिभाशाली बालकों की श्रेणी में आते हैं।
2. जो किसी विशिष्ट क्षेत्र (कला, नृत्य, संगीत, खेल) में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ :-

1. मानसिक रूप से स्वस्थ
2. सकारात्मक सोच
3. सहनशील
4. ईर्ष्यावान
5. आत्मसम्मान के साथ-2 दूसरों का सम्मान करने वाले

6. अधिक स्वस्था।
7. कठिन विषयों में करी।
8. विद्यालय जाने से पहले पढ़ना लिखना।
9. मानसिक क्रियाओं में तीव्र गति से विकास।
10. निर्णय क्षमता।

⇒ शिक्षा व्यवस्था
तीव्र पीनता।

1. चयन प्रक्रिया।
2. समूह / संवर्धन कार्यक्रम / पाठ्यक्रम।
3. पृथक कलाओं की व्यवस्था।
4. पुस्तकालय सुविधाएँ।
5. नैतिकता का प्रशिक्षण।
6. उत्तरदायित्व के कार्य सौपना।
7. निगमन दृष्टिकोण, प्रयोगशाला प्रोजेक्ट आदि विषयों का प्रयोग करना।
8. कभी-2 ऐसे बालकों को कला में पढ़ाने के अवसर प्रदान करना।

2. पिछड़े बालक / शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा ⇒

बोर्डनटाल के अनुसार ⇒

सामान्यतः पिछड़े बालक वे होते हैं जिनकी शैक्षणिक उपलब्धि उनकी सामान्य योग्यताओं से कम होती है।

वर्त के अनुसार:-

पिछड़े बालक वे होते हैं जो अपनी आधुनिक स्तर की कला से एक सीढ़ी नीचे की कला का कार्य करने में भी असमर्थ होते हैं।

एक पिछड़ा बालक मंदबुद्धि ही होगा ऐसा जल्दी नहीं है क्योंकि एक प्रतिभाशाली बालक पिछड़ा नहीं हो सकता इसकी कोई गारन्टी नहीं है।

⇒ पिछड़ेपन के प्रकार :-

① सामान्य पिछड़ापन :-

यदि बालक अपने पाठ्यक्रम के सभी विषयों में कमजोर है तो उसे सामान्य पिछड़ापन कहते हैं।

② विशिष्ट पिछड़ापन :-

यदि बालक अपने पाठ्यक्रम के एक या दो विषयों में कमजोर है तो उसे विशिष्ट पिछड़ापन कहते हैं।

⇒ पिछड़ेपन का उपचार किया जा सकता है।

जिम्मा व्यावस्था :-

1. पिछड़ेपन के कारणों की जानकारी व उन्हें दूर करना।
अर्थात् निदान व उपचार करना।
2. व्यक्तिगत ध्यान देना।
3. वातावरणीय कारकों पर नियंत्रण करना।
4. निर्देशन व परामर्श आदि।

3. मंदबुद्धि बालक / शारीरिक अक्षमता से सीखने वाले बालक / मानसिक रूप से पिछड़े बालक / मानसिक रूप से विकलांग बालक :-

मंदबुद्धि बालक अपनी मानसिक योग्यताओं का प्रयोग करने की दृष्टि से उसी प्रकार अपंग व बेबस होते हैं जिस प्रकार से शारीरिक रूप से विकलांग बालक अपंग व बेबस होता है।

ऐसे

- बालक अपने विकास काल में चलना, खोलना व अन्य व्यवहार करना सड़ गति से सीखते हैं।
- तार्किक चिन्तन करने में असमर्थ होते हैं।
- दूसरों पर निर्भर रहते हैं।
- जिज्ञासा प्रकृति नहीं पायी जाती है।
- असफलता का भाव पाया जाता है।
- हीनभावना के विचार रहते हैं।
- उत्तरदायित्व की क्षमता भी सीमित होती है।

विषय व्यवस्था :-

1. प्रथमकरण।
2. जन्मदर पर नियंत्रण।
3. विशेष विषय विधियों को प्रयोग में लाना।
4. माण्डेसरी पद्धति का प्रयोग।
5. मूल्य दृश्य सामग्री का प्रयोग अर्थात् मूर्त रूप से पढ़ाना।
6. अध्ययन की गति धीमी रखना व पाठ को बार-बार दोहराना।

4. अधिगम निर्योग्य बालक :-

ऐसे बालक जिसकी भाषा को खोलने लिखने समझने में शारीरिक, मानसिक या अन्य किसी कारण से बाधा उत्पन्न होती है। अधिगम निर्योग्य बालक कहलाते हैं।

ऐसे बालकों की संख्या, दिशा, समय वर्तनी सम्बन्धी अभ्युद्दिष्टों व अभ्यागतिष्ठ गणना करने में भी बाधा उत्पन्न होती है।

- अधिगम नियंत्रिता** चार प्रकार की होती हैं।
1. डिस्प्रोफिया $\Rightarrow$ लेखन सम्बंधी व्यक्तिक्रम / असामान्यता
(आपस-व्यक्ति सम्बंधी व्यक्तिक्रम डिस्प्रोफिया)
 2. डिस्लेक्सिया $\Rightarrow$ पठन-वाचन सम्बंधी व्यक्तिक्रम
 3. डिस्कैलकुलिया $\Rightarrow$ गणितीय व्यक्तिक्रम (कैलकुलेशन में कम)
 4. डिस्प्रैक्सिया $\Rightarrow$ लेखन, पठन व गणितीय व्यक्तिक्रम
5. **बाल अपराधी या समस्यात्मक बालक** $\Rightarrow$ जो बालक अपनी भावस्थितियों की पूर्ति समाज द्वारा प्रमुख व्यवहार के अनुसार करते हैं बाल अपराधी कहलाते हैं। अर्थात् सामाजिक नियमों का उल्लंघन कर समाज विरोधी तरीके से बिना जाने वाक्ता कार्य बाल अपराधी कहलाता है।
- बाल अपराधियों की विशेषताएँ :**
- $\Rightarrow$ ऐसे बालकों की तारीरिक संरचना अलग-अलग होती है।
 1. तथा ये हस्त-पुस्तक मांसपेशियों वाले होते हैं।
 2. ऐसे बालक सन्देशी, आक्रामक विद्रोही निडर व विध्वंसक होते हैं।
 3. ऐसे बालक सत्ता के विरोधी सत्ता के अंगों में शुरू से वैसे व शत्रुपूर्ण भाव रखते पाए जाते हैं।
 4. ऐसे बालकों में बहिमुखी व्यक्तित्व पाए जाते पाये जाते हैं।
 5. ऐसे बालकों में स्नेह का अभाव पाया जाता है। तथा माता-पिता के नैतिक मानक उन्हे निर्दिष्ट नहीं कर पाते हैं।

- ⇒ बाल अपराधी के कल्याण / कार्य :-
1. शिक्षण में बाधा उत्पन्न करना।
 2. विद्यालय से भाग जाना।
 3. कक्षा में देरी से आना।
 4. गुरुकार्य मंटी करना।
 5. क्रोध व अंगड़ा करना।
 6. छिटे बालों को तंग करना।
 7. कक्षा में चिड़चिड़ापन।
 8. विद्यालय की सामग्री को नुकसान पहुँचाना।
 9. विद्यालय की कार्यवाहियों के प्रति असहयोग व्यक्त करना।
 10. निर्दिष्ट भटकना।
 11. धोखाधड़ी व ठगरी करना।
 12. जुआ खेलना।
 13. मादक पदार्थों का सेवन करना।
 14. हत्या करना।
 15. अन्य असामाजिक व अनैतिक कार्य।

- ⇒ शिक्षा व्यवस्था :-
1. उचित निर्देशन व परामर्श।
 2. मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति।
 3. अच्छी आदतों का विकास।
 4. प्रेम व सहानुभूति पूर्ण व्यवहार।
 5. अच्छे कार्यों की प्रशंसा करना।
 6. मनोरंजन की उचित व्यवस्था।
 7. जिम्मेदारी के कार्यों में व्यस्त रखना।

6. सृजनशील बालक:-

जो बालक स्वयं की प्रेरणा व नये विचारों तथा प्रतिभाओं के साथ किसी नयी वस्तु का सृजन करता है। सृजनशील बालक कहलाता है। ऐसे बालकों में अनेक विशेषताएँ पाई जाती हैं।

1. कल्पनाशीलता।
2. मौलिकता - (नवीन और उपयोगी)
3. ममता या लोचलिलता।
4. निरन्तरता या धारा प्रवाहित।
5. विस्तारण।
6. दूर दृष्टि व अन्य। अन्तः दृष्टि।
7. जिज्ञासा।
8. समस्या समाधान करने की योग्यता।
9. दृढ़ मिश्रवर्ती।
10. जोखिम उठाने की उत्सुकता।
11. कर्षि में निष्ठा।
12. संवेदनशीलता।

⇒ सृजनात्मकता का स्वरूप:-

1. सृजनात्मकता जन्मजात व अभिवृद्धि होती है।
2. यह सार्वभौमिक होती है।
3. सृजनात्मकता का विकास बाल्यवस्था से प्रारम्भ हो जाता है। तथा 20 वर्ष की आयु तक सृजनात्मकता अपने चरम सीमा पर पहुँच जाती है।
4. जो बालक अध्ययन में विशेष करी लेते हैं उनमें सृजनात्मकता कम अथवा भगण्य होती है।
5. जो बालक सृजनशील होते हैं वे अध्ययन में कम करी लेते हैं।

7. सृजनात्मकता व बुद्धि में सकारात्मकता सम्बंध होता है।
8. औसत से अधिक बुद्धि वाला कोई भी बालक सृजनशील हो सकता है।

⇒ सृजनात्मकता अपसारी चिन्तन (^{विपरीत} *Divergent thinking*) पर आधारित होती है जबकि बुद्धि अभिसारी चिन्तन पर आधारित होती है।

- ⇒ अपसारी चिन्तन:- इसमें व्यक्ति उत्तर की खोज में चिन्तन मगन करने लगता है। तथा विस्तृत उत्तर देता है। जैसे:-
1. लकड़ी के छड़ के क्या उपयोग हैं।
 2. हवा तथा पानी के बीच सम्बंध बताइये ?
 3. छोड़ के खिलौने को ममोरंजक बनाने के सुझाव दें।
 4. यदि मनुष्य पक्षियों की भाँति उड़ने लग जाये तो।

- ⇒ अभिसारी चिन्तन:- ^{बुद्धि (अभिसारी चिन्तन बहुत थोड़ी बुद्धि)}
 इस चिन्तन में व्यक्ति भाँति तर्क से सोचता हुआ एक निश्चित उत्तर पर पहुँच जाता है जैसे:-
1. भारत के प्रधानमंत्री कौन हैं।
 2. सबसे पहले बुद्धि परीक्षण कब बना।

Note: अभिसारी व अपसारी शब्दों का सर्वप्रथम प्रयोग गिलफोर्ड ने किया।

- ⇒ सृजनात्मकता का मापन:- सृजनात्मकता को मापने का प्रमुख प्रयास गिलफोर्ड ने किया। इसके अलावा

गैरजेल, जेक्सन, लौरेंस आदि के द्वारा भी सृजनात्मक परीक्षणों को प्रतिपादित किया गया।

- भारत में बाइर, मेहनदी व पासी के द्वारा महत्वपूर्ण सृजनात्मकता परीक्षणों का निर्माण किया गया।
- इन परीक्षणों के माध्यम से कल्पनाशीलता, मौलिकता, लौकिकता, चाराम्रवाहित, विस्तारण आदि विशेषताओं का मापन किया जाता था जो कि गिल्फर्ड के द्वारा बताई गई हैं।

⇒ सृजनात्मकता के विकास के लिए विद्या का अभिोधन :-

1. सृजनात्मकता के विकास के लिए उचित वातावरण व आवश्यक उपलब्ध कराने चाहिए।
सहायन
2. बालकों में आत्मविश्वास की भावना जागृत करनी चाहिए।
3. पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए।
4. कक्षा का वातावरण अधिकार व दबाव से मुक्त तथा प्रजातांत्रिक होना चाहिए।
5. सृजनात्मकता के विकास के लिए विचारविशेष / मस्तिष्क विप्लव / मस्तिष्क उद्दोलन / ब्रेनस्टोर्मिंग जैसे कुछ स्वनामों का अभिोधन करना चाहिए।
6. बालकों की कल्पनाशीलता को सक्रिय रूप से देखना चाहिए।
7. विद्यालय में प्रोजेक्ट कार्य, औद्योगिक भ्रमण, सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में भागीदारी, समाजोपयोगी उत्पादन कार्यक्रम तथा विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के अभिोधन द्वारा बालकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर दिए जाने चाहिए।

कृति [Interest]

Page No. 10.5

Date

- किसी व्यक्ति वस्तु घटना आदि की ओर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति ही कृति है।
- कृति का सम्बंध मनोव्यापारिक कारणों से होता है अर्थात् कृति पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है। अतः कृति जन्मजात व अर्जित होती है।

अवधान

- अवधान से तात्पर्य है ध्यान केन्द्रित करना।
- अवधान के लिए पहली आवश्यकता है उत्तेजना की एकान्तता।
- मानसिक थकान होने पर अवधान करने में बाधा उत्पन्न होती है।
- अवधान कृति पर आधारित होती है।
- कृति व अवधान एक सिक्के के दो पहलु हैं।

बालकों में कृति जगृत करने के उपाय :-

1. अभिप्रेरित करना।
2. विषय वस्तु की जीवन में उपयोगिता बताकर।
3. विषय वस्तु की उद्देश्यपूर्णता बताकर।
4. विषय वस्तु को जीवन से जोड़कर। पढ़ाना।
5. ज्ञात से अज्ञात, सरल से जटिल, विशिष्ट से सामान्य, आदि शिक्षण सुषो के प्रयोग द्वारा।
6. मृत्प-दृश्य सामग्री के प्रयोग द्वारा।
7. स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान करना।

अभिरुचि / अभिग्रथता / अभिसमता (Aptitude)

1. अभिरुचि एक प्रकृति प्रदत्त जन्मजात योग्यता होती है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति डॉक्टर बनने की योग्यता

रखता है तो कोई इन्जीनियर, संगीतकार, अभिनेता आदि बनने की।

2. अभिकृति वह वर्तमान स्थिति है जो भविष्य की ओर संकेत करती है।

3. अभिकृति बालक की वर्तमान आदतों, विरोधताओं आदि के आधार पर भविष्यवाणी करती है कि बालक किस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकता है।

4. अभिकृति एक ऐसी मानसिक योग्यता है जो यह दर्शाती है कि प्रशिक्षण के द्वारा बालक किस क्षेत्र में कैरियर अपेक्षित कर सकता है।

5. अभिकृति परीक्षण के द्वारा बालक की दिशा निर्धारित की जा सकती है।

6. निर्देशानु व परामर्श के क्षेत्र में अभिकृति का विशेष महत्व है।

7. अभिकृति का सम्बंध सम्पूर्ण व्यक्तित्व से है जबकि कृति व्यक्तित्व का एक पहलु है।

अभिप्रेति (Attitude) :- अभिप्रेति सकारात्मक व्यक्तित्व के दृष्टिकोण से है। यह दृष्टिकोण ही हमारे व्यवहार से एक निश्चित दिशा प्रदान करता है।

- अभिप्रेति अपना रूप बदल भी सकती है।
- अभिप्रेति पर मुख्य प्रभाव वातावरण का पड़ता है।
- अभिप्रेति किसी भी व्यक्ति वस्तु धारणा आदि के प्रति अनुकूल व प्रतिकूल दृष्टिकोण का प्रदर्शन करती है।

सकारात्मक अभिप्रेति का विकास नकारात्मक की अपेक्षा आसानी से हो जाता है।

- सकारात्मक अभिवृद्धि में रुकड़म से परिवर्तन नहीं लाया जा सकता इसी को धीरे-2 मोड़ा जा सकता है।
- जिसके अपने विचारों, भावनाओं व उदाहरणों द्वारा अभिवृद्धि में परिवर्तन ला सकता है।

* आदतें (Habits)

गैरेट के अनुसार:-

जो व्यवहार बार-2 दोहराने से स्थापित हो जाता है। उसे आदत कहते हैं।

जो-जो काम करने की आदतें कम खुद को चार करते हैं

- आदतें अभिवृद्धि होती हैं।
- आदतों में स्थापना पायी जाती है।
- जिन कार्यों को करने की आदत पड़ जाती है। उनमें यथार्थता व सटीकता आ जाती है।
- अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है।
- आदत की क्रियाओं में अधिक थकान महसूस नहीं होती है।
- आदत सुधार या परिवर्तन के लिए बाधा बन जाती है।
- आदतें हमारे समय व क्षमता को खराब करती हैं।
- आदतें हमारे व्यक्तित्व को एक दिशा प्रदान करती हैं।
- आदतें उपयोगी भी होती हैं व हानिकारक भी।

आत्म सम्प्रत्यय (Self Concept)

1. संवेदना:-

जब एक नवजात शिशु किसी तेज आवाज को सुनकर चौंक जाता है अथवा उत्तेजित हो जाता है तो वह प्रारम्भिक अनुभूति संवेदना है। इसे ज्ञान की पहली सीढ़ी माना जाता है।

2. प्रत्यक्षीकरण :-

जब बालू किसी तैल आवाज को सुनकर यह जान जाता है कि आवाज किसकी है तथा कहाँ से आ रही है तो इसे प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। यह ज्ञान की दूसरी सीढ़ी है।

- प्रत्यक्षीकरण का पूर्व अनुभव से सम्बन्ध होता है।
संवेदना + विचार = प्रत्यक्षीकरण

3. सम्प्रत्यय निर्माण :-

जब बालू पक्षियों के किसी झुण्ड के पास जाता है जोर से ताली बजाता है तो सारे पक्षी उड़ जाते हैं यही है बालू के मस्तिष्क में सम्प्रत्यय का निर्माण होता है कि पक्षी उड़ते हैं।

धरि-2 बालू में भार, सम्प्रत्यय, आकार, सम्प्रत्यय, रंग, सम्प्रत्यय, समर्थ सम्प्रत्यय, सौन्दर्य सम्प्रत्यय आदि का विकास होने लगता है।

4. आत्म सम्प्रत्यय :-

आत्म सम्प्रत्यय की अवधारणा का सर्वप्रथम विचार विलियम जेम्स ने अपनी पुस्तक *Principles of Psychology* के अन्तर्गत प्रस्तुत किया।

- आत्मसम्प्रत्यय से तात्पर्य स्वयं के बारे में विचार करने से है।

- यह स्व विकसित व्यक्तित्व की पहचान है।

- अपने बारे में जानना, समझना, पहचानना ही आत्मसम्प्रत्यय है।

- अपनी अच्छाइयों, बुराइयों क्षमताओं व दुर्बलताओं सफलताओं व असफलताओं आदि के बारे में जानना व उनका आंकलन करना ही आत्म सम्प्रत्यय है।

सामाजिक कौशल (Social Skills): जीवन कौशल की शिक्षा में सामाजिक कौशल का विशेष महत्व है। सामाजिक कौशल से परिपूर्ण व्यक्ति इस प्रजातीय समाज में एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका का निर्वहण कर पाएँ।

सामाजिक कौशल निम्न प्रकार के होते हैं।

1. अन्तः वैयक्तिक सम्बन्ध।
2. सहजता या जागरूकता।
3. सामाजिक भावना की परिपक्वता।
4. मैतृत्व कौशल।
5. समस्या समाधान कौशल। ✓
6. सम्प्रेषण कौशल आदि।
↳ अर्थहीन आकड़ों को क्रमबद्ध या व्यवस्थित कर अर्थपूर्ण बना देना सुचना है।
- सुचना का आदान-प्रदान सम्प्रेषण कहलाता है।
- सम्प्रेषण को अंग्रेजी में Communication कहते हैं।

Communication शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Communis से हुई है जिसका अर्थ है समान बनाना (to make common)

सम्प्रेषण के दो पक्ष होते हैं। [Comm-unity]

1. सम्प्रेषक :- सुचना देने वाला।
2. सम्प्रेषी :- सुचना प्राप्त करने वाला।

सम्प्रेषण के प्रकार :-

1. अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण (Interpersonal Communication)
दो या दो से अधिक के मध्य बातचीत।

2. अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण / अन्तर्वैयक्तिक / आत्म सम्प्रेषण
(Intrapersonal Communication)
स्वयं से बातचीत

3. लोक सम्प्रेषण (Mass Communication)
एक व्यक्ति व समुह के मध्य बातचीत
सम्प्रेषण माध्यम

1. शाब्दिक < मौखिक
लिखित

2. अशाब्दिक < मुखार्थ
सांकेतिक भाषा (ग्राफिक साधन)

3. जन्मसंचार माध्यम

श्रुत्य
दृश्य
श्रुत्य-दृश्य